सेन्ट देव वाणी

प्रथम अंक, ई- न्यूज़ पत्रिका, जुलाई -दिसम्बर, 2021 आंतरिक परिचालन हेतु

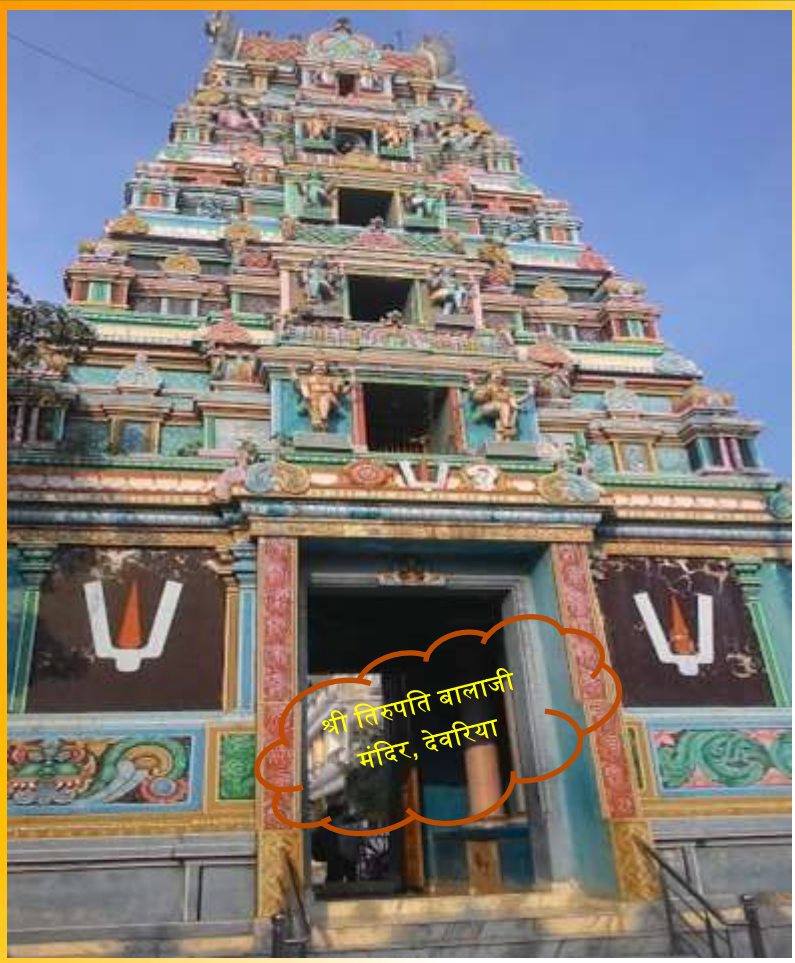

सेन्ट देव वाणी

हिन्दी एवं आजादी का अमृत महोत्सव विशेषांक

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

क्षेत्रीय कार्यालय, प्रथम तल, पालिका बाज़ार, देवरिया

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
(सदैव ऊर्जावान; निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा - हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे ।

जय राजभाषा! जय हिंद!

सेन्ट देव वाणी

आज़ादी का अमृत महोत्सव

संरक्षण एवं मार्गदर्शन:

श्री सुशील कुमार उपाध्याय,
क्षेत्रीय प्रबन्धक

उप संरक्षक :

श्री आर.एस. राय, मुख्य बन्धक

सम्पादकीय मंडल :

श्री मनोज कुमार सिन्हा, मुख्य प्रबंधक,
श्रीमती रजनी कुमारी, वरिष्ठ प्रबंधक

सम्पादक

श्रीमती शुभ लक्ष्मी शर्मा,
राजभाषा अधिकारी

इस ई-पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया का सहमत होना आवश्यक नहीं है। *कृपया इस ई-पत्रिका के लिए अपने बहुमूल्य सुझाव, विचार, लेख, कहानी, कविताएं, फोटो, मनोरंजन इत्यादि पर रचनाएं, शाखा एवं स्टाफ सदस्यों की उपलब्धियां आदि* **hindigoraro@centralbank.co.in** *पर मेल द्वारा भेज सकते हैं.*
विनम्र निवेदन- शुभ लक्ष्मी शर्मा, राजभाषा अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर

अनुक्रमणिका

1. राजभाषा प्रतिज्ञा
2. माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी का हिन्दी दिवस के अवसर पर संदेश
3. आजादी के अमृत महोत्सव के शुभारम्भ पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का संदेश
4. माननीय प्रबन्ध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी महोदय का हिन्दी दिवस संदेश
5. क्षेत्रीय प्रबन्धक सुशील कुमार उपाध्याय का संदेश
6. सम्पादकीय
7. देवरिया क्षेत्र : एक नजर में
8. शुभकामनायें
9. कविता ओ मेरे प्यारे तिरंगे एवं राष्ट्रपिता तुमको नमन – श्री इंद्र कुमार दीक्षित
10. देवरिया के स्वतंत्रता सेनानी पंडित राम चंद्र शर्मा
11. देवरिया के स्वतंत्रता सेनानी पंडित राम सुमेर शुक्ल
12. देवरिया के स्वतंत्रता सेनानी विश्वनाथ राय
13. मैं भारत हूं – श्रीमती पूजा कुमारी
14. भारतीय अर्थव्यवस्था में एम.एस.एम.ई.- चुनौतियां व भविष्य – रजनी कुमारी
15. कोरोना योद्धाओं के प्रति सम्मान- श्री अमित सिंह
16. ऑनलाईन शिक्षण प्रनाली श्री अमित मिश्रा
17. कोरोना महामारी – श्रीमती अनामिका मल्ल
18. हिन्दी वर्चुअल कार्यशाला दि.18.12.2021
19. सतर्कता जागरुकता सप्ताह- कुछ झलकियां
20. भृष्टाचारमुक्त भारत- शुभ लक्ष्मी शर्मा
21. हमारे बैंक की व्यावसायिक वृद्धि- श्रीमती पूजा कुमारी.
22. कविता खूनी हस्ताक्षर
23. हिन्दी दिवस 2021 -एक रिपोर्ट
24. स्थापना दिवस –कुछ झलकियां
25. अपना बैंक, प्रेस मीडिया की नजर में
26. अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, वाराणसी
27. हम इतना तो कर सकते हैं
28. महाप्रबंधक रिटेल एवं कंज्यूमर लेंडिंग श्रीमती नमिता रॉय शर्मा का क्षेत्रीय कार्यालय देवरिया का दौरा
29. टाटा एआईए-सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया का व्यावसायिक पार्टनर
30. सेवा निवृत्ति
31. हिन्दी के प्रयोग के लिये वर्ष 201-22 का वार्षिक कार्यक्रम

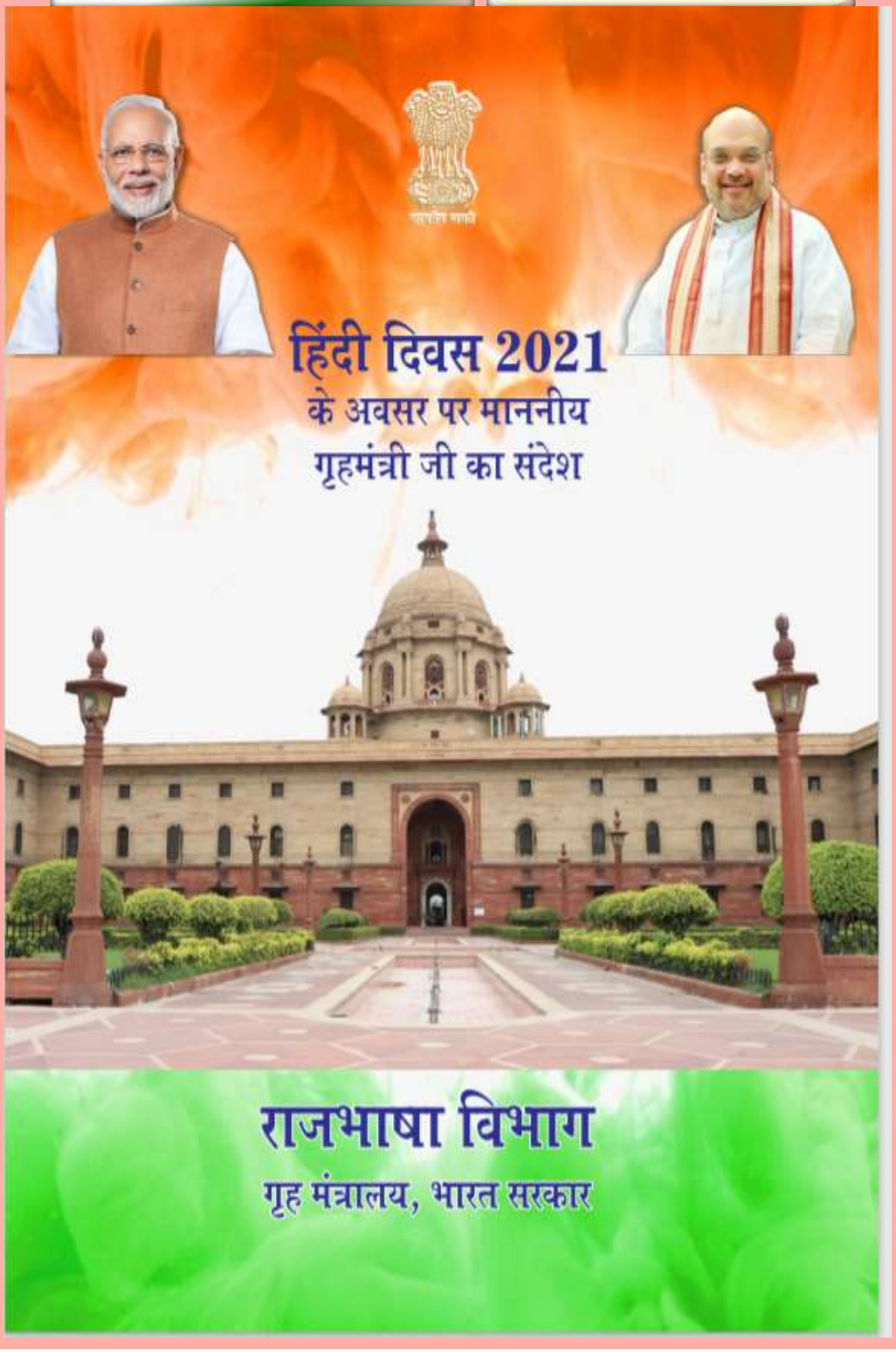
हिंदी दिवस 2021
के अवसर पर माननीय
गृहमंत्री जी का संदेश
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA

प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

"मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।"

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलत: इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियो को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

"जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।"

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल 'कंठस्थ' को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए 'लीला हिंदी ऐप',- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेजेज थ्रू आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप' तथा 'ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप' भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूं कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियो को पुन: हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, वंदे मातरम।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021

(अमित शाह)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आजादी के अमृत महोत्सव के शुभारम्भ पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का संदेश

मंच पर विराजमान गुजरात के राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत जी, मुख्यमंत्री श्री विजय रूपानी जी, केंद्रीय मंत्रिपरिषद के मेरे सहयोगी श्री प्रहलाद पटेल जी,

लोकसभा में मेरे साथी सांसद श्री सीआर पाटिल जी, अहमदाबाद के नवनिर्वाचित मेयर श्रीमान किरीट सिंह भाई, साबरमती ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री कार्तिकेय साराभाई जी और साबरमती आश्रम को समर्पित जिनका जीवन है ऐसे आदरणीय अमृत मोदी जी, देश भर से हमारे साथ जुड़े हुए सभी महानुभाव, देवियों और सज्जनों, और मेरे युवा साथियों!

आज जब मैं सुबह दिल्ली से निकला तो बहुत ही अद्भुद संयोग हुआ। अमृत महोत्सव के प्रारंभ होने से पहले आज देश की राजधानी में अमृत वर्षा भी हुई और वरुण देव ने आशीर्वाद भी दिया। ये हम सभी का सौभाग्य है कि हम आजाद भारत के इस ऐतिहासिक कालखंड के साक्षी बन रहे हैं। आज दांडी यात्रा की वर्षगांठ पर हम बापू की इस कर्मस्थली पर इतिहास बनते भी देख रहे हैं और इतिहास का हिस्सा भी बन रहे हैं। आज आजादी के अमृत महोत्सव का प्रारंभ हो रहा है, पहला दिन है। अमृत महोत्सव, 15 अगस्त 2022 से 75 सप्ताह पूर्व आज प्रारंभ हुआ है और 15 अगस्त 2023 तक चलेगा। हमारे यहां मान्यता है कि जब कभी ऐसा अवसर आता है तब सारे तीर्थों का एक साथ संगम हो जाता है। आज एक राष्ट्र के रूप में भारत के लिए भी ऐसा ही पवित्र अवसर है। आज हमारे स्वाधीनता संग्राम के कितने ही पुण्यतीर्थ, कितने ही पवित्र केंद्र, साबरमती आश्रम से जुड़ रहे हैं।

स्वाधीनता संग्राम की पराकाष्ठा को प्रणाम करने वाली अंडमान की सेल्यूलर जेल, अरुणाचल प्रदेश से 'एंग्लो-इंडियन war' की गवाह केकर मोनिन्ग की भूमि, मुंबई का अगस्त क्रांति मैदान, पंजाब का जालियाँवाला बाग, उत्तर प्रदेश का मेरठ, काकोरी और झाँसी, देश भर में ऐसे कितने ही स्थानों पर आज एक साथ इस अमृत महोत्सव का श्रीगणेश हो रहा है। ऐसा लग रहा है जैसे आज़ादी के असंख्य संघर्ष, असंख्य बलिदानों का और असंख्य तपस्याओं की ऊर्जा पूरे भारत में एक साथ पुनर्जागृत हो रही है। मैं इस पुण्य अवसर पर बापू के चरणों में अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ। मैं देश के स्वाधीनता संग्राम में अपने आपको आहूत करने वाले, देश को नेतृत्व देने वाली सभी महान विभूतियों के चरणों में आदरपूर्वक नमन करता हूँ, उनका कोटि-कोटि वंदन करता हूँ। मैं उन सभी वीर जवानों को भी नमन करता हूँ जिन्होंने आज़ादी के बाद भी राष्ट्ररक्षा की परंपरा को जीवित रखा, देश की रक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान दिए, शहीद हो गए। जिन पुण्य आत्माओं ने आज़ाद भारत के पुनर्निर्माण में प्रगति की एक एक ईंट रखी, 75 वर्ष में देश को यहां तक लाए, मैं उन सभी के चरणों में भी अपना प्रणाम करता हूँ।

साथियों, जब हम ग़ुलामी के उस दौर की कल्पना करते हैं, जहां करोड़ों-करोड़ लोगों ने सदियों तक आज़ादी की एक सुबह का इंतज़ार किया, तब ये अहसास और बढ़ता है कि आज़ादी के 75 साल का अवसर कितना ऐतिहासिक है, कितना गौरवशाली है। इस पर्व में शाश्वत भारत की परंपरा भी है, स्वाधीनता संग्राम की परछाई भी है, और आज़ाद भारत की गौरवान्वित करने वाली प्रगति भी है। इसीलिए, अभी आपके सामने जो प्रेजेंटेशन रखा गया, उसमें अमृत महोत्सव के पाँच स्तंभों पर विशेष ज़ोर दिया गया है। FREEDOM STRUGGLE आइडियाज AT 75, ACHIEVEMENTS AT 75, ACTIONS AT 75, और RESOLVES AT 75, ये पांचों स्तम्भ आज़ादी की लड़ाई के साथ-साथ आज़ाद भारत के सपनों और कर्तव्यों को देश के सामने रखकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगे। इन्हीं संदेशों के आधार पर आज 'अमृत महोत्सव' की वेबसाइट के साथ साथ चरखा अभियान और आत्मनिर्भर इनक्यूबेटर को भी लॉन्च किया गया है।

भाइयों बहनों, इतिहास साक्षी है कि किसी राष्ट्र का गौरव तभी जाग्रत रहता है जब वो अपने स्वाभिमान और बलिदान की परम्पराओं को अगली पीढ़ी को भी सिखाता है, संस्कारित करता है, उन्हें इसके लिए निरंतर प्रेरित करता है। किसी राष्ट्र का भविष्य तभी उज्ज्वल होता है जब वो अपने अतीत के अनुभवों और विरासत के गर्व से पल-पल जुड़ा रहता है। फिर भारत के पास तो गर्व

करने के लिए अथाह भंडार है, समृद्ध इतिहास है, चेतनामय सांस्कृतिक विरासत है। इसलिए आज़ादी के 75 साल का ये अवसर एक अमृत की तरह वर्तमान पीढ़ी को प्राप्त होगा। एक ऐसा अमृत जो हमें प्रतिपल देश के लिए जीने, देश के लिए कुछ करने के लिए प्रेरित करेगा।

साथियों, हमारे वेदों का वाक्य है- मृत्योः मुक्षीय मामृतात्। अर्थात, हम दुःख, कष्ट, क्लेश और विनाश से निकलकर अमृत की तरफ बढ़ें, अमरता की ओर बढ़ें। यही संकल्प आज़ादी के इस अमृत महोत्सव का भी है। आज़ादी का अमृत महोत्सव यानी- आज़ादी की ऊर्जा का अमृत, आज़ादी का अमृत महोत्सव यानी – स्वाधीनता सेनानियों से प्रेरणाओं का अमृत। आज़ादी का अमृत महोत्सव यानी – नए विचारों का अमृत। नए संकल्पों का अमृत। आज़ादी का अमृत महोत्सव यानी – आत्मनिर्भरता का अमृत। और इसीलिए, ये महोत्सव राष्ट्र के जागरण का महोत्सव है। ये महोत्सव, सुराज्य के सपने को पूरा करने का महोत्सव है। ये महोत्सव, वैश्विक शांति का, विकास का महोत्सव है।

साथियों, अमृत महोत्सव का शुभारंभ दांडी यात्रा के दिन हो रहा है। उस ऐतिहासिक क्षण को पुनर्जीवित करने के लिए एक यात्रा भी अभी शुरू होने जा रही है। ये अद्भुत संयोग है कि दांडी यात्रा का प्रभाव और संदेश भी वैसा ही है, जो आज देश अमृत महोत्सव के माध्यम से लेकर आगे बढ़ रहा है। गांधी जी की इस एक यात्रा ने आज़ादी के संघर्ष को एक नई प्रेरणा के साथ जन-जन से जोड़ दिया था। इस एक यात्रा ने अपनी आज़ादी को लेकर भारत के नजरिए को पूरी दुनिया तक पहुंचा दिया था। ऐसा ऐतिहासिक और ऐसा इसलिए क्योंकि, बापू की दांडी यात्रा में आज़ादी के आग्रह के साथ साथ भारत के स्वभाव और भारत के संस्कारों का भी समावेश था।

हमारे यहां नमक को कभी उसकी कीमत से नहीं आँका गया। हमारे यहाँ नमक का मतलब है- ईमानदारी। हमारे यहां नमक का मतलब है- विश्वास। हमारे यहां नमक का मतलब है- वफादारी। हम आज भी कहते हैं कि हमने देश का नमक खाया है। ऐसा इसलिए नहीं क्योंकि नमक कोई बहुत कीमती चीज है। ऐसा इसलिए क्योंकि नमक हमारे यहाँ श्रम और समानता का प्रतीक है। उस दौर में नमक भारत की आत्मनिर्भरता का एक प्रतीक था। अंग्रेजों ने भारत के मूल्यों के साथ-साथ इस आत्मनिर्भरता पर भी चोट की। भारत के लोगों को इंग्लैंड से आने वाले नमक पर निर्भर हो जाना पड़ा। गांधी जी ने देश के इस पुराने दर्द को समझा, जन-जन से जुड़ी उस नब्ज को पकड़ा। और देखते ही देखते ये आंदोलन हर एक भारतीय का आंदोलन बन गया, हर एक भारतीय का संकल्प बन गया।

साथियों, इसी तरह आज़ादी की लड़ाई में अलग-अलग संग्रामों, अलग-अलग घटनाओं की भी अपनी प्रेरणाएं हैं, अपने संदेश हैं, जिन्हें आज का भारत आत्मसात कर आगे बढ़ सकता है। 1857 का स्वतंत्रता संग्राम, महात्मा गांधी का विदेश से लौटना, देश को सत्याग्रह की ताकत फिर याद दिलाना, लोकमान्य तिलक का पूर्ण स्वराज्य का आह्वान, नेताजी सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिंद फौज का दिल्ली मार्च, दिल्ली चलो, ये नारा आज भी हिन्दुस्तान भूल नहीं सकता है? 1942 का अविस्मरणीय आंदोलन, अंग्रेजों भारत छोड़ो का वो उद्घोष, ऐसे कितने ही अनगिनत पड़ाव हैं जिनसे हम प्रेरणा लेते हैं, ऊर्जा लेते हैं। ऐसे कितने ही हुतात्मा सेनानी हैं जिनके प्रति देश हर रोज अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है।

1857 की क्रांति के मंगल पांडे, तात्या टोपे जैसे वीर हों, अंग्रेजों की फौज के सामने निर्भीक गजर्ना करने वाली रानी लक्ष्मीबाई हों, कित्तूर की रानी चेन्नमा हों, रानी गाइडिन्ल्यू हों, चंद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, अशफाकउल्ला खां, गुरू राम सिंह, टिटूस जी, पॉल रामासामी जैसे वीर हों, या फिर पंडित नेहरू, सरदार पटेल, बाबा साहेब आंबेडकर, सुभाषचंद्र बोस, मौलाना आजाद, खान अब्दुल गफ्फार खान, वीर सावरकर जैसे अनगिनत जननायक! ये सभी महान व्यक्तित्व आजादी के आंदोलन के पथ प्रदर्शक हैं। आज इन्हीं के सपनों का भारत बनाने के लिए, उनको सपनों का भारत बनाने के लिए हम सामूहिक संकल्प ले रहे हैं, इनसे प्रेरणा ले रहे हैं।

साथियों, हमारे स्वाधीनता संग्राम में ऐसे भी कितने आंदोलन हैं, कितने ही संघर्ष हैं जो देश के सामने उस रूप में नहीं आए जैसे आने चाहिए थे। ये एक-एक संग्राम, संघर्ष अपने आप में भारत की असत्य के खिलाफ सत्य की सशक्त घोषणाएं हैं, ये एक-एक संग्राम भारत के स्वाधीन स्वभाव के सबूत हैं, ये संग्राम इस बात का भी साक्षात प्रमाण हैं कि अन्याय, शोषण और हिंसा के खिलाफ भारत की जो चेतना राम के युग में थी, महाभारत के कुरुक्षेत्र में थी, हल्दीघाटी की रणभूमि में थी, शिवाजी के उद्घोष में थी, वही शाश्वत चेतना, वही अदम्य शौर्य, भारत के हर क्षेत्र, हर वर्ग और हर समाज ने आज़ादी की लड़ाई में अपने भीतर प्रज्वलित करके रखा था। जननि जन्मभूमिश्च, स्वर्गादपि गरीयसी, ये मंत्र आज भी हमें प्रेरणा देता है।

आप देखिए हमारे इस इतिहास को, कोल आंदोलन हो या 'हो संघर्ष', खासी आंदोलन हो या संथाल क्रांति, कछोहा कछार नागा संघर्ष हो या कूका आंदोलन, भील आंदोलन हो या मुंडा क्रांति, संन्यासी आंदोलन हो या रमोसी संघर्ष, कित्तूर आंदोलन, त्रावणकोर आंदोलन, बारडोली सत्याग्रह, चंपारण सत्याग्रह, संभलपुर संघर्ष, चुआर संघर्ष, बुंदेल संघर्ष, ऐसे कितने ही संघर्ष और आंदोलनों ने देश के हर भूभाग को, हर कालखंड में आज़ादी की ज्योति से प्रज्वलित रखा। इस दौरान हमारी सिख गुरू परंपरा ने देश की संस्कृति, अपने रीति-रिवाज की रक्षा के लिए, हमें नई ऊर्जा दी, प्रेरणा दी, त्याग और बलिदान का रास्ता दिखाया। और इसका एक और अहम पक्ष है, जो हमें बार-बार याद करना चाहिए।

साथियों, आजादी के आंदोलन की इस ज्योति को निरंतर जागृत करने का काम, पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण, हर दिशा में, हर क्षेत्र में, हमारे संतों ने, महंतों ने, आचार्यों ने निरंतर किया था। एक प्रकार से भक्ति आंदोलन ने राष्ट्रव्यापी स्वाधीनता आंदोलन की पीठिका तैयार की थी। पूर्व में चैतन्य महाप्रभु, राम कृष्ण परमहंस और श्रीमंत शंकर देव जैसे संतों के विचारों ने समाज को दिशा दी, अपने लक्ष्य पर केंद्रित रखा। पश्चिम में मीराबाई, एकनाथ, तुकाराम, रामदास, नरसी मेहता हुए, उत्तर में, संत रामानंद, कबीरदास, गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास, गुरु नानकदेव, संत रैदास, दक्षिण में मध्वाचार्य, निम्बार्काचार्य, वल्लभाचार्य, रामानुजाचार्य हुए, भक्ति काल के इसी खंड में मलिक मोहम्मद जायसी, रसखान, सूरदास, केशवदास, विद्यापति जैसे महानुभावों ने अपनी रचनाओं से समाज को अपनी कमियां सुधारने के लिए प्रेरित किया।
ऐसे अनेकों व्यक्तित्वों के कारण ये आंदोलन क्षेत्र की सीमा से बाहर निकलकर के पूरे भारत के जन-जन को आप में समेट लिया। आज़ादी के इन असंख्य आंदोलनों में ऐसे कितने ही सेनानी, संत आत्माएं, ऐसे अनेक वीर बलिदानी हैं जिनकी एक-एक गाथा अपने आप में इतिहास का एक-एक स्वर्णिम अध्याय हैं! हमें इन महानायकों, महानायिकाओं, उनका जीवन इतिहास भी देश के सामने पहुंचाना है। इन लोगों की जीवन गाथाएं, उनके जीवन का संघर्ष, हमारे स्वतंत्रता आंदोलन के उतार-चढ़ाव, कभी सफलता, कभी असफलता, हमारी आज की पीढ़ी को जीवन का हर पाठ सिखाएगी। एकजुटता क्या होती है, लक्ष्य को पाने की जिद क्या क्या होती है, जीवन का हर रंग, वो और बेहतर तरीके से समझेंगे.

भाइयों और बहनों,
आपको याद होगा, इसी भूमि के वीर सपूत श्यामजी कृष्ण वर्मा, अंग्रेजों की धरती पर रहकर, उनकी नाक के नीचे, जीवन की आखिरी सांस तक आजादी के लिए संघर्ष करते रहे। लेकिन उनकी अस्थियाँ सात दशकों तक इंतज़ार करती रहीं कि कब उन्हें भारत माता की गोद नसीब होगी। आखिरकार, 2003 में विदेश से श्याम जी कृष्ण वर्मा की अस्थियाँ मैं अपने कंधे पर उठाकर के ले आया था। ऐसे कितने ही सेनानी हैं, देश पर अपना सब कुछ समर्पित कर देने वाले लोग हैं। देश के कोने-कोने से कितने ही दलित, आदिवासी, महिलाएं और युवा हैं जिन्होंने असंख्य तप और त्याग किए। याद करिए, तमिलनाडु के 32 वर्षीय नौजवान कोडि काथ् कुमरन, उनको याद कीजिए अंग्रेजों ने उस नौजवान को सिर में गोली मार दी, लेकिन उन्होंने मरते हुये भी देश के झंडे को जमीन में नहीं गिरने दिया। तमिलनाडु में उनके नाम से ही कोडि काथ् शब्द जुड़ गया, जिसका अर्थ है झंडे को बचाने वाला! तमिलनाडु की ही वेलू नाचियार वो पहली महारानी थीं, जिन्होंने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी।

इसी तरह, हमारे देश के आदिवासी समाज ने अपनी वीरता और पराक्रम से लगातार विदेशी हुकूमत को घुटनों पर लाने का काम किया था। झारखंड में भगवान बिरसा मुंडा, उन्होंने अंग्रेजों को चुनौती दी थी, तो मुर्मू भाइयों ने संथाल आंदोलन का नेतृत्व किया। ओडिशा में चक्रा बिसोई ने लड़ाई छेड़ी, तो लक्ष्मण नायक ने गांधीवादी तरीकों से चेतना फैलाई। आंध्र प्रदेश में मण्यम वीरुडु यानी जंगलों के हीरो अल्लूरी सीताराम राजू ने रम्पा आंदोलन का बिगुल फूंका। पासल्था खुन्गचेरा ने मिज़ोरम की पहाड़ियों में अंग्रेज़ो से लोहा लिया था। ऐसे ही, गोमधर कोंवर, लसित बोरफुकन और सीरत सिंग जैसे असम और पूर्वोत्तर के अनेकों स्वाधीनता सेनानी थे जिन्होंने देश की आज़ादी में योगदान दिया है। यहां गुजरात में वड़ोदरा के पास जांबूघोड़ा जाने के रस्ते पर हमारे नायक कौम के आदिवासियों का बलिदान कैसे भूल सकते हैं, मानगढ़ में गोविंद गुरु के नेतृत्व में सैकड़ों आदिवासियों का नरसंहार हुआ, उन्होंने लड़ाई लड़ी। देश इनके बलिदान को हमेशा याद रखेगा।

साथियों, माँ भारती के ऐसे ही वीर सपूतों का इतिहास देश के कोने कोने में, गाँव-गाँव में है। देश इतिहास के इस गौरव को सहेजने के लिए पिछले छह सालों से सजग प्रयास कर रहा है। हर राज्य, हर क्षेत्र में इस दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं। दांडी यात्रा से जुड़े स्थल का पुनरुद्धार देश ने दो साल पहले ही पूरा किया था। मुझे खुद इस अवसर पर दांडी जाने का सौभाग्य मिला था। अंडमान में जहां नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने देश की पहली आज़ाद सरकार बनाकर तिरंगा फहराया था, देश ने उस विस्मृत इतिहास को भी भव्य आकार दिया है। अंडमान निकोबार के द्वीपों को स्वतन्त्रता संग्राम के नामों पर रखा गया है। आज़ाद हिन्द

सरकार के 75 साल पूरे होने पर लाल किले पर भी आयोजन किया गया, तिरंगा फहराया गया और नेताजी सुभाष बाबू को श्रद्धांजलि दी गई। गुजरात में सरदार पटेल की विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा उनके अमर गौरव को पूरी दुनिया तक पहुंचा रही है। जालियाँवाला बाग में स्मारक हो या फिर पाइका आंदोलन की स्मृति में स्मारक, सभी पर काम हुआ है। बाबा साहेब से जुड़े जो स्थान दशकों से भूले बिसरे पड़े थे, उनका भी विकास देश ने पंचतीर्थ के रूप में किया है। इस सबके साथ ही, देश ने आदिवासी स्वाधीनता सेनानियों के इतिहास को देश तक पहुंचाने के लिए, आने वाली पीढ़ियों के लिए पहुंचाने के लिए हमारी आदिवासियों की संघर्षों की कथाओं को जोड़ता हुआ देश में म्यूज़ियम्स बनाने का एक प्रयास शुरू किया है।

साथियों, आजादी के आंदोलन के इतिहास की तरह ही आजादी के बाद के 75 वर्षों की यात्रा, सामान्य भारतीयों के परिश्रम, इनोवेशन, उद्यम-शीलता का प्रतिबिंब है। हम भारतीय चाहे देश में रहे हों, या फिर विदेश में, हमने अपनी मेहनत से खुद को साबित किया है। हमें गर्व है हमारे संविधान पर। हमें गर्व है हमारी लोकतांत्रिक परंपराओं पर। लोकतंत्र की जननी भारत, आज भी लोकतंत्र को मजबूती देते हुए आगे बढ़ रहा है। ज्ञान-विज्ञान से समृद्ध भारत, आज मंगल से लेकर चंद्रमा तक अपनी छाप छोड़ रहा है। आज भारत की सेना का सामर्थ्य अपार है, तो आर्थिक रूप से भी हम तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं। आज भारत का स्टार्टअप इकोसिस्टम, दुनिया में आकर्षण का केंद्र बना है, चर्चा का विषय है। आज दुनिया के हर मंच पर भारत की क्षमता और भारत की प्रतिभा की गूंज है। आज भारत अभाव के अंधकार से बाहर निकलकर 130 करोड़ से अधिक आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए आगे बढ़ रहा है.

साथियों, ये भी हम सभी का सौभाग्य है आज़ाद भारत के 75 साल और नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जन्म जयंति के 125 वर्ष हम साथ-साथ मना रहे हैं। ये संगम सिर्फ तिथियों का ही नहीं बल्कि अतीत और भविष्य के भारत के विजन का भी अद्भुत मेल है। नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने कहा था कि भारत की आज़ादी की लड़ाई सिर्फ ब्रिटिश सम्राज्यवाद के विरुद्ध नहीं है, बल्कि वैश्विक साम्राज्यवाद के विरुद्ध है। नेताजी ने भारत की आजादी को पूरी मानवता के लिए जरूरी बताया था। समय के साथ नेताजी की ये बात सही सिद्ध हुई। भारत आज़ाद हुआ तो दुनिया में दूसरे देशों में भी स्वतंत्रता की आवाज़ें बुलंद हुईं और बहुत ही कम समय में साम्राज्यवाद का दायरा सिमट गया। और साथियों, आज भी भारत की उपलब्धियां आज सिर्फ हमारी अपनी नहीं हैं, बल्कि ये पूरी दुनिया को रोशनी दिखाने वाली हैं, पूरी मानवता को उम्मीद जगाने वाली हैं। भारत की आत्मनिर्भरता से ओतप्रोत हमारी विकास यात्रा पूरी दुनिया की विकास यात्रा को गति देने वाली है।

कोरोना काल में ये हमारे सामने प्रत्यक्ष सिद्ध भी हो रहा है। मानवता को महामारी के संकट से बाहर निकालने में वैक्सीन निर्माण में भारत की आत्मनिर्भरता का आज पूरी दुनिया को लाभ मिल रहा है। आज भारत के पास वैक्सीन का सामर्थ्य है तो वसुधैव कुटुंबकम के भाव से हम सबके दुख दूर करने में काम आ रहे हैं। हमने दुख किसी को नहीं दिया, लेकिन दूसरों का दुख कम करने में खुद को खपा रहे हैं। यही भारत के आदर्श हैं, यही भारत का शाश्वत दर्शन है, यही आत्मनिर्भर भारत का भी तत्वज्ञान है। आज दुनिया के देश भारत का धन्यवाद कर रहे हैं, भारत में भरोसा कर रहे हैं। यही नए भारत के सूर्योदय की पहली छटा है, यही हमारे भव्य भविष्य की पहली आभा है।

साथियों, गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है- 'सम-दुःख-सुखम् धीरम् सः अमृतत्वाय कल्पते'। अर्थात्, जो सुख-दुःख, आराम चुनौतियों के बीच भी धैर्य के साथ अटल अडिग और सम रहता है, वही अमृत को प्राप्त करता है, अमरत्व को प्राप्त करता है। अमृत महोत्सव से भारत के उज्ज्वल भविष्य का अमृत प्राप्त करने के हमारे मार्ग में यही मंत्र हमारी प्रेरणा है। आइये, हम सब दृढ़संकल्प होकर इस राष्ट्र यज्ञ में अपनी भूमिका निभाएँ।

साथियों, आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान, देशवासियों के सुझावों से, उनके मौलिक विचारों से अनगिनत असंख्य विचार निकलेंगे। कुछ बातें अभी जब मैं आ रहा था तो मेरे मन में भी चल रहीं थी। जन भागीदारी, जन सामान्य को जोड़ना, देश का कोई नागरिक ऐसा ना हो कि इस अमृत महोत्सव का हिस्सा ना हो। अब जैसे मान लीजिए हम छोटा सा एक उदाहरण दें- अब सभी स्कूल कॉलेज, आजादी से जुड़ी हुई 75 घटनाओं का संकलन करें, हर स्कूल तय करे कि हमारी स्कूल आजादी की 75 घटनाओं का संकलन करेगी, 75 ग्रुप्स बनाएं, उन घटनाओं पर वो 75 विद्यार्थी 75 ग्रुप जिसमें आठ सौ, हजार, दो हजार विद्यार्थी हो सकते हैं, एक स्कूल ये कर सकता है। छोटे-छोटे हमारे शिशु मंदिर के बच्चे होते हैं, बाल मंदिर के बच्चे होते हैं, आजादी के आंदोलन से जुड़े 75 महापुरुषों की सूची बनाएं, उनकी वेशभूषा करें, उनके एक-एक वाक्यों को बोलें, उसका कंपटीशन हो, स्कूलों में भारत के नक्शे पर आजादी के आंदोलन से जुड़े 75 स्थान चिन्हित किए जाएं, बच्चों को कहा जाए कि बताओ भई बारडोली कहा आया? चंपारण कहा आया? लॉ कॉलेजों के छात्र-छात्राएं ऐसी 75 घटनाएं खोजें और मैं हर कॉलेज से आग्रह करूंगा, हर लॉ स्कूल से आग्रह करूंगा 75

घटनाएं खोजें जिसमें आजादी की लड़ाई जब चल रही थी तब कानूनी जंग कैसे चली? कानूनी लड़ाई कैसे चली? कौन लोग थे कानूनी लड़ाई लड़ रहे थे? आजादी के वीरों बचाने के लिए कैसे-कैसे प्रयास हुए? अंग्रेज सल्तनत की judiciary का क्या रवैया था? सारी बातें हम लिख सकते हैं। जिनका interest नाटक में है, वो नाटक लिखें। फाइन आर्ट्स के विद्यार्थी उन घटनाओं पर पेंटिंग बनाएं, जिसका मन करे कि वो गीत लिखे, वो कविताएं लिखें। ये सब शुरू में हस्तलिखित हो। बाद में इसको डिजिटल स्वरूप भी दिया जाए और मैं चाहूंगा कुछ ऐसा कि हर स्कूल-कॉलेज का ये प्रयास, उस स्कूल-कॉलेज की धरोहर बन जाए। और कोशिश हो कि ये काम इसी 15 अगस्त से पहले पूरा कर लिया जाए। आप देखिए पूरी तरह वैचारिक अधिष्ठान तैयार हो जाएगा। बाद में इसे जिलाव्यापी, राज्यव्यापी, देशव्यापी स्पर्धाएं भी आयोजित हो सकती हैं।

हमारे युवा, हमारे Scholars ये ज़िम्मेदारी उठाएँ कि वो हमारे स्वाधीनता सेनानियों के इतिहास लेखन में देश के प्रयासों को पूरा करेंगे। आज़ादी के आंदोलन में और उसके बाद हमारे समाज की जो उपलब्धियां रही हैं, उन्हें दुनिया के सामने और प्रखरता से लाएँगे। मैं कला-साहित्य, नाट्य जगत, फिल्म जगत और डिजिटल इंटरनेटनमेंट से जुड़े लोगों से भी आग्रह करूंगा, कितनी ही अद्वितीय कहानियाँ हमारे अतीत में बिखरी पड़ी हैं, इन्हें तलाशिए, इन्हें जीवंत कीजिए, आने वाली पीढ़ी के लिए तैयार कीजिए। अतीत से सीखकर भविष्य के निर्माण की ज़िम्मेदारी हमारे युवाओं को ही उठानी है। साइंस हो, टेक्नोलॉजी हो, मेडिकल हो, पॉलिटिक्स हो, आर्ट या कल्चर हो, आप जिस भी फील्ड में हैं, अपनी फील्ड का कल, आने वाला कल, बेहतर कैसे हो इसके लिए प्रयास कीजिए।

मुझे विश्वास है, 130 करोड़ देशवासी आज़ादी के इस अमृत महोत्सव से जब जुड़ेंगे, लाखों स्वाधीनता सेनानियों से प्रेरणा लेंगे, तो भारत बड़े से बड़े लक्ष्यों को पूरा करके रहेगा। अगर हम देश के लिए, समाज के लिए, हर हिन्दुस्तानी अगर एक कदम चलता है तो देश 130 करोड़ कदम आगे बढ़ जाता है। भारत एक बार फिर आत्मनिर्भर बनेगा, विश्व को नई दिशा दिखा देगा। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ, आज जो दांडी यात्रा के लिए चल रहे हैं एक प्रकार से बड़े ताम-झाम के बिना छोटे स्वरूप में आज उसका प्रारंभ हो रहा है। लेकिन आगे चलते-चलते जैसे दिन बीतते जाएंगे, हम 15 अगस्त के निकट पहुंचेंगे, ये एक प्रकार से पूरे हिन्दुस्तान को अपने में समेट लेगा। ऐसा बड़ा महोत्सव बन जाएगा, ऐसा मुझे विश्वास है। हर नागरिक का संकल्प होगा, हर संस्था का संकल्प होगा, हर संगठन का संकल्प होगा देश को आगे ले जाने का। आजादी के दीवानों को श्रद्धांजलि देने का यही रास्ता होगा।

मैं इन्हीं कामना के साथ, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ मैं फिर एक बार आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं! मेरे साथ बोलेंगे भारत माता की …….. जय! भारत माता की …….. जय! भारत माता की …….. जय!

वंदे …… मातरम! वंदे …… मातरम! वंदे …… मातरम!

जय हिंद …… जय हिंद! जय हिंद …… जय हिंद! जय हिंद …… जय हिंद!

माननीय प्रबन्ध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी महोदय का हिन्दी दिवस संदेश (14.09.2021)

प्रिय सेंट्रलाइट साथियो,

प्रकृति ने मनुष्य को ही शब्दों के माध्यम से भाव अभिव्यक्त करने का गुण प्रदान किया है. सभ्यता के विकास क्रम में भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में विभिन्न भाषायें विकसित हुईं फिर उनकी लिपियां बनीं तो बोलचाल की भाषा लेखन की भाषा भी बन गई. लिपियुक्त भाषायें समय के साथ-साथ समृद्ध भी होती गई. उनमें साहित्य सृजन होने लगा. ग्रंथ लिखे जाने लगे. इस तरह विश्व के हर क्षेत्र में अब भाषा रहित मानव समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती है.

विश्वभर में उपनिवेशवाद बढ़ने के साथ शासकों की भाषा ही शासन की भाषा बनती गई. इसके साथ ही शासकों ने अपनी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनवा दिया. इसके बाद अपनी भाषा को रोजगार की भाषा बना दिया जिससे अनेक स्थानीय भाषायें क्रमश: प्रयोग से हटती गई. परिणामस्वरूप अनेक भाषायें तो विलुप्त ही हो गई. इसी क्रम में भारत में विदेशी शासन की स्थापना हुई और विश्व के अन्य उपनिवेशों की तरह भारत में भी विदेशी शासकों की भाषा शासन की भाषा बनी फिर शिक्षा का माध्यम बनी और रोजगार की भाषा भी बन गई. तथापि विश्व के अन्य देशों की तुलना में हमारे स्वतंत्रता आंदोलन के साथ-साथ भाषा के आंदोलन को भी आगे बढ़ाया गया. जैसे-जैसे भारत स्वतंत्रता प्राप्ति की ओर आगे बढ़ रहा था, भारत की अपनी भाषा को शासन की भाषा बनाने का भी प्रयास किया जा रहा था.

अंतत: राष्ट्र स्वतंत्र हुआ. देश का अपना संविधान बना जिसमें 14 सितम्बर 1949 को देश की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया. साथ-साथ ही देश के सभी राज्यों को अपने राज्यों में अपनी भाषाओं को राज्य की राजभाषा बनाने का अधिकार देकर स्थानीय भाषाओं का मार्ग प्रशस्त किया तदनुसार भारत के राज्यों ने अपनी-अपनी प्रमुख भाषाओं को अपने राज्य की राजभाषा बना लिया.

इस वर्ष जब देश की स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है, हमारे लिये विचारणीय होना चाहिये कि भारत की राजभाषा के रूप में हिन्दी भाषा ने तदनुसार कितनी प्रगति की है. उसकी प्रगति की दिशा में क्या-क्या लक्ष्य शेष हैं और उन लक्ष्यों को किस तरह वास्तविकता में परिवर्तित किया जा सकता है. इस पर विचार किया जाना चाहिये.

वास्तव में स्वतंत्रा के पश्चात हिन्दी ने राजभाषा के रूप में बबहुत प्रगति की है. इसे यदि सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के संदर्भ में देखा जाये तो हमारा बैंक भारत का पहला पूर्ण स्वदेशी बैंक है. हम जनता के लिये समर्पित बैंक हैं. हमारी शाखायें देश के कोने कोने में हैं जहाँ हम अपने ग्राहकों को सर्वोत्तम ग्राहक सेवा प्रदान करने का हर सम्भव प्रयास करते हैं. ग्राहक से सम्पर्क के लिये ग्राहक की भाषा सर्वश्रेष्ठ माध्यम होती है. अत: देश की बहुसंख्यक जनसख्या की भाषा हिन्दी स्वत: सर्वश्रेष्ठ माध्यम मानी जाती है.

हमने "जनता का कार्य जनता की भाषा में हो" के अनुरूप अपना सीबीएस पूर्णत: हिन्दी –अंग्रेजी द्विभाषिक करवाया है. इसी प्रकार हम ग्राहकों को उनके लेन-देन सम्बंधी एसएमएस हिन्दी सहित अन्य प्रमुख भारतीय भाषाओं में भी प्राप्त करने का विकल्प देते हैं. हम पत्राचार में हिन्दी का सर्वोत्तम ग्राहक सेवा प्रदान करने का हर सम्भव प्रयास करते हैं तथा कहते हैं कि "आप हिन्दी में बात करें हमें प्रसन्नता होगी". हम यह भी कहते हैं कि हम हिन्दी पत्राचार का स्वागत करते हैं.

हिन्दी दिवस के पावन अवसर पर अपनी शुभकामनायें अग्रेषित करते हुए मैं आपसे अपील करता हूं कि सभी सेंट्रलाइट अपना अधिक से अधिक कार्यालयीन कार्य भारत की राजभाषा हिन्दी में करें.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,
जय हिन्द, जय भारत,

(एम. वी. राव)
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

क्षेत्रीय प्रबन्धक महोदय का संदेश

प्रिय सेंट्रलाइट साथियो,

आज हम सभी हिन्दी और आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, और इसी को यादगार बनाने के लिये हम अपने बैंक की पत्रिका "**सेंट देव वाणी**" का "**आजादी का अमृत महोत्सव विशेषांक**" प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष हो रहा है. हमें इस बात की प्रसन्नता है कि आज हम इस स्वर्णिम पल के गवाह बन रहे हैं. हमारे देश की आज़ादी की भांति हमारे देश की भाषा हिन्दी की भी कितने उतार चढ़ावों के बाद राजभाषा का दर्जा प्राप्त करने का अमृत महोत्सव मना रहे हैं. आप सभी को आजादी और हिन्दी का अमृत महोत्सव वर्ष की हार्दिक बधाई और अभिनंदन. सितम्बर, 2021 माह के दौरान हमारे स्टाफ अधिकारियों/कर्मचारियों ने बहुत ही उत्साह के साथ हिन्दी माह के दौरान केंद्रीय कार्यालय के दिशानिर्देशानुसार कोविड 19 की सामाजिक शिष्टाचार को ध्यान में रखते हुए हिंदी माह की सभी प्रतियोगितायें जैसे गीत गायन प्रतियोगिता, व्हाट्सैप हिंदी टंकण प्रतियोगिता, सामान्य हिंदी शब्द ज्ञान प्रतियोगिता आदि ऑनलाइन आयोजित करायी गयीं और हिंदी दिवस व पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन सामाजिक दूरी को ध्यान में रखते हुए किया गया. अक्टूबर माह में दि. 26.10.2021 से 01.11.2021 तक सतर्कता जागरुकता सप्ताह मनाया जिसका विषय भी भारत की आजादी को याद करते हुए "स्वतंत्र भारत@75 सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता" पर विभिन्न क्षेत्र में विभिन्न कार्यक्रम किये गये. आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत विविध क्रेडिट कैम्प किये गये. हमारा क्षेत्रीय कार्यालय नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, देवरिया का संचालक भी है और इसके अंतर्गत नगर स्तर पर भी हिन्दी के प्रसार के लिये कटिबद्ध हैं.

साथियो, जिस प्रकार पिछले वित्तीय वर्ष में आप सभी के प्रयासों से हमने क्षेत्र में विभिन्न अभियानों जैसे कासा अभियान, ऐड्वांस, एन.पी.ए. में कमी लाने, वसूली, ए.पी.वाई. में सभी शाखाओं को दिये गये लक्ष्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त कर उत्कृष्ट कार्य किया है जिसके लिये मैं देवरिया क्षेत्रीय कार्यालय के अंतर्गत देवरिया और बलिया दोनों जनपदों की शाखाओं में कार्यरत सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनायें देता हूँ और अपेक्षा करता हूँ कि आने वाले वित्तीय वर्ष 2022-23 में भी इसी उत्साह के साथ सभी लक्ष्य को सफलतापूर्वक प्राप्त कर सकें.

हमें आशा है कि पत्रिका का यह विशेषांक आपको पसंद आयेगा। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, जानकारियों एवं विभिन्न गतिविधियों से आप अवश्य लाभान्वित होंगे. अगला वित्तीय वर्ष 2022-23 आप सभी के लिये मंगलमय, स्वस्थ, सुखी, समृद्धशाली एवं खुशी भरा हो, इन्हीं शुभकामनाओं सहित,

शुभकामनाओं सहित,

(सुशील कुमार उपाध्याय)
क्षेत्रीय प्रबंधक

सम्पादकीय

प्रिय साथियो,

"हिन्दी हमारी भाषा ही नहीं यह हमारी पहचान भी है." आजादी के 75 वर्ष के पूरे होने के सुअवसर पर आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं. साथ ही 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी के राजभाषा घोषित होने के कारण हिन्दी का भी अमृत महोत्सव वर्ष है. हम सुअवसर पर अपने क्षेत्र की पत्रिका **"सेंट देव वाणी"** का **"राजभाषा एवं आजादी का अमृत महोत्सव विशेषांक"** आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अति हर्ष का अनुभव महसूस हो रहा है. अपने कार्यालयीन कार्य में हिन्दी का दैनिक रूप से प्रयोग करके हम अपने संवैधानिक कर्तव्य को प्रेमपूर्वक निभायें तथा समस्त लक्ष्यों को आगे अनवरत बढ़ते हुए प्राप्त करें. इस वर्ष केंद्रीय कार्यालय के निर्देशानुसार क्षेत्रीय कार्यालय गोरखपुर के अंतर्गत हिन्दी माह के दौरान अखिल भारतीय गीत गायन प्रतियोगिता, व्हाट्सैप टंकण प्रतियोगिता, मौलिक लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी ज्ञान प्रश्नावली प्रतियोगिता आदि सभी प्रतियोगितायें और कार्यक्रम ऑनलाइन माध्यम से आयोजित करवाया तथा केंद्रीय कार्यालय तथा कोविड के नियमों का अनुपालन करते हुए सभी कार्यक्रमों का आयोजन किया जिसमें शाखा और क्षेत्रीय कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने बहुत उत्साहपूर्वक भाग लिया और विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कार भी प्राप्त किया.

हमेशा आपके अनमोल सुझावों का मान रखते हुए हमने इस पत्रिका को क्षेत्रीय कार्यालय एवं इसके अंतर्गत क्षेत्र की विभिन्न शाखाओं में हो रही विविध गतिविधियों के साथ-साथ स्टाफ की रचनाओं से एवं विविध विचारों से सजाया है. पत्रिका के इस विशेषांक में विषयानुकूल संदर्भित आजादी के अमृत महोत्सव से सम्बंधित लेखों आदि को शामिल किया गया है जिससे इस पत्रिका की सार्थकता बनी रहे. पत्रिका को सजाने-संवारने, तैयार करने में सहयोग देने के लिये सभी सदस्यों का हार्दिक धन्यवाद.

हम अपने सुधी पाठकों का अपने विचारों/ प्रतिक्रियाओं द्वारा हमारा मनोबल बढ़ाने के लिये हृदय से आभार प्रकट करते हैं साथ ही उम्मीद करते है कि यह ई-पत्रिका आपको पसंद आयेगी. आपसे नम्र निवेदन है कि अपने सुझाव, निबंध, लेख, कहानी, कविता, संस्मरण आदि द्वारा इसे समृद्ध बनायें.

ईश्वर से आपके आने वाले नव वर्ष में सुख, समृद्धि और खुशहाली की मंगलकामनाओं सहित,

(शुभ लक्ष्मी शर्मा)
राजभाषा अधिकारी

देवरिया क्षेत्र एक नजर में

31.12.2021 को देवरिया का व्यवसाय

पैरामीटर	30.09.2021	31.12.2021	प्रगति
चालू खाता	82.61	86.94	4.33
बचत खाता	2549.96	2534.54	-15.42
कासा	2632.57	2621.48	-11.09
कुल जमा	3914.4	3899.1	-15.3
कुल अग्रिम	675.44	710.97	35.53
कुल व्यवसाय	4589.84	4610.07	20.23
कृषि	331.98	339.14	7.16
एमएसएमई	210.47	226.66	16.19
प्राथमिक क्षेत्र	574.34	596.35	22.01
खुदरा	132.88	145.07	12.19
एनपीए	73.76	73.93	0.17

क्षेत्र देवरिया में विभिन्न जनपद में कुल 60 शाखायें

1. देवरिया - 35 शाखायें
2. बलिया - 25 शाखायें

नराकास, देवरिया का प्रथम राजभाषा शील्ड पुरस्कार प्राप्त

एडवांस और एन.पी.ए. मैनेजमेंट में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु अभिनंदन

श्री संतोष राठौड़
शाखा प्रबंधक
शाखा-खुखुंदू, देवरिया

श्री प्रकाश चंद्र
शाखा प्रबंधक
राघवनगर, देवरिया

श्री गौरव कुमार राय
शाखा प्रबंधक
इंदपुर, देवरिया

श्री अंजनी कुमार श्रीवास्तव
शाखा प्रबंधक
पडौली बाज़ार, देवरिया

श्री अमित अग्रवाल,
वरिष्ठ प्रबंधक,
सिकंदरपुर, देवरिया

श्री महेंद्र प्रताप सिंह,
व.प्रबंधक,
मु. शाखा, देवरिया

नराकास, देवरिया के निबंध लेखन प्रतियोगिता में पुरस्कृत

सुश्री अनुश्री मालवीय, प्रबंधक
शाखा-पैकोली, देवरिया
द्वितीय पुरस्कार प्राप्त

सुश्री पूजा कुमारी, शाखा प्रबंधक
शाखा कैथोली, बलिया, देवरिया
सांत्वना पुरस्कार प्राप्त

सुश्री रजनी कुमारी, वरिष्ठ प्रबंधक,
क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर
सांत्वना पुरस्कार प्राप्त

ओ मेरे प्यारे तिरंगे

श्री इंद्र कुमार दीक्षित, मंत्री,
नागरी प्रचारिणी सभा,
देवरिया

ओ मेरे प्यारे तिरंगे, फरफराओ,
हिन्दवालों का तुम्हें शत शत नमन है.
शान है तु दिव्य भारत सर्जना का,
देश अभिमान, युग की गर्जना का.
मान तू गणतंत्र की संकल्पना का
गान है तू शौर्य गाथा , वंदना का.
गगन में विश्वस बनाकर लह लहाओ.
ऐ मेरे प्यारे तिरंगे, फर फराओ.
हिन्दवालों का तुम्हें शत शत नमन है.

राष्ट्रपिता तुमको वंदन

राष्ट्रपिता तुमको वंदन
हे राष्ट्रपिता तुमको वंदन.
हे अहिंसा के पुजारी
सत्य आग्रह शस्त्र धारी
एक लकुटी हाथ में ले,
नाप लेते धरा सारी.
लघुता प्रभुता सहिष्णुता
समता के मूर्तिमान
संकल्प-सदन ! हे राष्ट्रपिता
तुमको वंदन! तुमको वंदन.

हे स्वदेशी वस्त्रधारी,
सन्त, खादी-वेशधारी
हो रहा अन्याय शोषण मनुजता का
बढ़ चले उस ठाँव तुम अविराम
नहीं लेते तनिक भी विश्राम
जब तक न लेते पूर्ण कर
स्थापित अमन. हे राष्ट्रपिता
तुमको वंदन, तुमको वंदन.

हे सत्य साधक, विश्व मानव!
हो गये भयभीत
तुमसे दनुज-दानव
वंचित के हित हुए अवतरित
भारत भूमि पर हे महा मानव!
मुक्त कर दीं, काट जंजीरें
गुलामी की सघन. हे राष्ट्रपिता
तुमको वंदन, तुमको वंदन.

देवरिया के स्वतंत्रता सेनानी पंडित राम चंद्र शर्मा

"वह खून कहो किस मतलब का जिसमें उबाल का नाम नहीं,
वह खून कहो किस मतलब का आ सके देश के काम नहीं।
वह खून कहो किस मतलब का जिसमें जीवन न रवानी है,
जो परवश होकर बहता है, वह खून नहीं है पानी है"।

गोपाल प्रसाद व्यास जी की ये पंक्तियाँ दर्शाती हैं कि भारत की आजादी के लिए 1857 से 1947 के बीच स्वतंत्रता का सपना सँजोये क्रांतिकारियों और शहीदों ने अपना तन-मन-धन सर्वस्व न्योछावर कर दिया और देश को आजाद कराने में अपना बहुत बड़ा योगदान दिया। भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग है। भारत की धरती पर जितनी देशभक्ति और मातृ-भावना उस युग में थी, उतनी कभी नहीं रही। देश के उत्तर प्रदेश का इतिहास ब्रिटिश शासन के दौरान और बाद में देश के इतिहास के साथ-साथ चलता है, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राज्य के लोगों का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। इसी उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में, नेपाल की सीमा के पास, गोरखपुर से सटा देवरिया जिला है। देवरिया का नाम जंग-ए-आजादी में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज है। यहां के लोगों ने 1857 की क्रांति से लेकर 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन तक में देश की आजादी के लिए कुर्बानी दी है।

देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने वाले वीर सपूतों के बलिदानों को भुलाया नहीं जा सकता. उन्होंने देश की आन-बान और शान के लिए हंसते-हंसते अपने प्राण न्यौछावर कर दिए. इनमें कुछ स्वतंत्रता सेनानी ऐसे भी थे, जिन्होंने देश प्रेम के लिए घर परिवार सब छोड़ दिया था और ब्रिटिश हुकूमत से लोहा लिया था. ऐसे ही थे **देवरिया** के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी **पंडित राम चन्द्र शर्मा**.

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पंडित राम चन्द्र शर्मा की गणना उन कुछ गिने चुने लोगों में की जाती है. जिनके जीवन का उद्देश्य व्यक्तिगत सुख न होकर समाज के उन सभी लोगों के हित के लिए रहा है. यही कारण है कि स्वतंत्रता संग्राम में अपने अद्वितीय योगदान के पश्चात पंडित राम चंद्र शर्मा ने अपने संघर्ष को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी जारी रखा. वे आजीवन पीड़ित और मानवता के कल्याण के लिए जूझते रहे.

पंडित राम चन्द्र शर्मा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी का जन्म 7 मार्च 1902 को जिले के अमवा तिवारी गांव में हुआ था. इनके पिता का राम प्रताप पांडेय और माता का नाम निऊरा देवी थी. पंडित राम चन्द्र शर्मा अपने पांच बहनों के इकलौते भाई थे. यही कारण था कि पंडित जी का बचपन अत्यंत लाड़ प्यार से बीता. पंडित जी उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके किंतु स्वाध्याय और बाबा राघव दास के सानिध्य में इन्होंने इतना ज्ञानार्जन किया कि उन्हें किसी विश्वविद्यालय की डिग्री की जरूरत नहीं पड़ी.

देवरिया स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पंडित राम चन्द्र शर्मा की शादी बचपन में उनके पिता ने अपने गांव अमवा से चार किलोमीटर दूर दुबौली के पंडित राम अधीन दुबे की पुत्री लवंगा देवी के साथ हुआ था. पंडित राम चन्द्र शर्मा ने बाबा राघव दास से दीक्षा लेने के बाद वह अपने माता-पिता और परिवार के सदस्यों को छोड़ कर देश की आजादी और स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े. बाबा राघव दास ने ही उनका नाम राम चन्द्र पांडेय से बदल कर राम चन्द्र शर्मा कर दिया था.

देवरिया स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पंडित राम चन्द्र शर्मा पहली बार 1927 ई.

में नमक सत्याग्रह में जेल गए थे. इसके बाद सन 1928 में भींगारी बाजार में नमक कानून तोड़कर वह बाबा राघव दास के साथ जेल गए. इसके बाद बाबा राघव दास ने उन्हें जेल में राजनीति का पाठ पढ़ाया था.

पंडित राम चन्द्र शर्मा सन 1930 में पंडित नेहरू के नेतृत्व में गोरखपुर में सत्याग्रह करते समय गिरफ्तार हुए थे. इसके बाद सन 1932 में थाना भोरे जिला सिवान (बिहार) में उनकी गिरफ्तारी हुई थी और गोपालगंज जिला जेल में बन्द रहे. सन 1933 ई. में पटना में सत्याग्रह करते समय गिरफ्तार हुए और 1 वर्ष तक दानापुर जेल में बंद रहे. 1939 ई. में लाल बहादुर शास्त्री, डॉ. सम्पूर्णानन्द, कमलापति त्रिपाठी के साथ बनारस (वाराणसी) आंदोलन के समय गिरफ्तार हुए थे. कुछ दिनों बनारस जेल में रहने के पश्चात उन्हें बलिया जेल में स्थानांतरित कर दिया गया था.

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पंडित राम चन्द्र शर्मा 10 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन में गिरफ्तार हुए और उन्हें जेल भेजा गया. इसी दौरान जब वह जेल भेजे गए थे तो इनके पिता राम प्रताप पांडेय का निधन हो गया. फिर भी अंग्रेजों ने उन्हें नहीं छोड़ा. उनके पिता की इच्छा थी कि वह एक बार अपने पुत्र को देख लें, लेकिन उनकी इच्छा अधूरी रह गई.

पंडित राम चन्द्र शर्मा के पौत्र द्वारिका पांडेय ने बताया कि दादा जी के पिता के निधन के बाद जेलर ने उनसे कहा था कि माफी मांग लो तुमको छोड़ दूंगा, लेकिन दादा जी अपनी बात पर अड़े रहे. उन्होंने जेलर से कहा था कि मैंने कोई गलती ही नहीं की है तो माफी मांगने का कोई सवाल ही नहीं उठता. इसके बाद जेल में बन्द उनके साथ और स्वतंत्रता सेनानियों ने उन्होंने बहुत समझाया और कहा था कि माफीनामा ऐसे समय में देने में कोई बुराई नहीं है. पिता के अंतिम दर्शन हो जाएंगे. फिर भी उनका कहना था आजादी की लड़ाई अपने अंतिम पड़ाव पर है. हम लोगों को कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए, जिससे लाखों लोगों का बलिदान व्यर्थ हो जाए.

पिता की मृत्यु के बाद 1945 में इनकी माता निऊरा देवी भी दिवंगत हो गईं. इनकी पत्नी श्रीमती लवंगा देवी भी स्वतंत्र भारत देखने से वंचित रहीं. 14 अगस्त 1947 को इनका भी निधन हो गया, किन्तु पंडित जी के लिए राष्ट्र के सुख दुःख के समक्ष व्यक्तिगत सुख दुःख का अर्थ नहीं रह गया था. उन्हें प्रसन्नता इस बात की थी की 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हो गया था.

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पंडित राम चन्द्र शर्मा जी 1947 में कांग्रेस के जिला मंत्री निर्वाचित चुने गए. कुछ समय बाद कांग्रेस में हो रही गतिविधियों से उनका मोह भंग हो गया और सन 1952 में मार्क्स के दार्शनिक चिंतन से अत्यंत प्रभावित होकर वह जीवन पर्यंत एक सच्चे समाजवादी के रूप में संघर्षरत रहे.

पंडित जी के पौत्र द्वारिका पांडेय ने बताया कि देश के सभी स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को उत्तराखंड में कांग्रेस की सरकार ने 7 एकड़ जमीन दी थी. इसमें दादा जी को भी जमीन मिली थी, लेकिन उन्होंने यह जमीन लेने से मना कर दिया. उन्होंने उस जमीन को गरीबों के नाम करवा दिया. इसके साथ ही उन्होंने पेंशन लेने से भी मना कर दिया था. बाद में उनके सहयोगियों ने उनको समझाया जिसके बाद उन्होंने 10 वर्षों के बाद पेंशन लिया.

पंडित राम चन्द्र शर्मा ने 26 अगस्त 1992 को अंतिम सांस ली. इसके बाद पूरे क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ पड़ी थी. उनके अंतिम दर्शन के लिए हजारों की भीड़ उमड़ पड़ी थी. राजकीय सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार हुआ.

हिंदी भाषा एक ऐसी भाषा है, जिसे बिना भेद भाव
प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है.
--डॉ मदन मोहन मालवीय

देवरिया के स्वतंत्रता सेनानी पंडित रामसुमेर शुक्ल

उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले में जन्मे महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पंडित रामसुमेर शुक्ल की स्मृतियों को उनकी जन्मभूमि पर संरक्षित करने की कवायद शुरू की गई है। इसके तहत जिले के रुद्रपुर तहसील के अंतर्गत आने वाले गांव भेंड़ी में पंडित शुक्ल की स्मृति में मुख्य प्रवेश द्वार का शिलान्यास किया गया है। पंडित शुक्ल ने आजादी की लड़ाई में अपने असाधारण योगदान के जरिए राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई थी।

आजादी की 75वीं वर्षगांठ पर देश भर में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। इस दौरान लोग स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े गर्व के पलों को याद कर रहे हैं। साथ ही आजादी की लड़ाई में योगदान देने वाले सेनानियों की स्मृति में देशभर में कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी क्रम में उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के भेंड़ी गांव में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पंडित रामसुमेर शुक्ल की याद में मुख्य प्रवेश द्वार का शिलान्यास और भूमिपूजन किया गया। भेंड़ी पंडित शुक्ल का पैतृक गांव है।

पंडित शुक्ल का जन्म देवरिया जिले के भेंड़ी गांव में 28 नवंबर 1915 हुआ था। सन 1936 के लाहौर अधिवेशन में उन्होंने मात्र 21 साल की आयु में मोहम्मद अली जिन्ना के द्विराष्ट्रवाद के सिद्धांत का खुले मंच से विरोध किया था। इसके अलावा भी उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में काफी सक्रिय रहते हुए असाधारण कार्य किए। गोविंद वल्लभ पंत ने आजादी के बाद उत्तराखंड में तराई को आबाद करने की जिम्मेदारी पंडित शुक्ल को दी थी। इसके बाद उन्होंने अपनी सूझबूझ से इस दिशा में महान प्रयास किया। उत्तराखंड के रुद्रपुर का वर्तमान स्वरूप पंडित शुक्ल के प्रयासों का ही नतीजा है।

स्वतंत्रता सेनानी विश्वनाथ राय

विश्वनाथ राय उनके हौसलों को न राह की मुश्किलें डिगा सकीं और न ही अंग्रेजों की बर्बरता असर दिखा पाई। आजादी लाना उनका जुनून था और आजाद भारत सपना। घर-परिवार की चिंता किए बगैर वह अपने मिशन में लगे रहे। कुछ ऐसी ही शख्सियत थी खुखुंदू के विश्वनाथ राय की। महात्मा गांधी के सिद्धांतों को अपनाते हुए आंदोलनों में लाठी खाई तो बहरी सरकार की तंद्रा भंग करने के लिए चंद्रशेखर आजाद के रास्ते को भी अपनाने से पीछे नहीं हटे। कालकोठरी में रहकर भी उन्होंने सिर्फ आजाद भारत का ही सपना देखा। प्रयागराज विवि के लॉ छात्र विश्वनाथ राय नेशनल यूथ लीग की कार्यसमिति के सदस्य के रूप में 1930 में महात्मा गांधी के सविनय अवज्ञा आंदोलन से जुड़े।

युवाओं के जत्थे के साथ उन्होंने प्रयागराज के घंटाघर पर तिरंगा फहराने का प्रण किया था। इस मौके पर दो साथियों की शहादत ने उन्हें इस तरह झकझोरा कि अब तक बापू के अहिंसक आंदोलन को ही आजादी का सही रास्ता मानने वाले विश्वनाथ ने हथियार उठाने का निर्णय

लिया। चंद्रशेखर आजाद के सानिध्य में पुलिस से बचते हुए वह दिन प्रतिदिन अंग्रेजी हुकूमत के लिए सिर दर्द बनते जा रहे थे। परिवार पर अंग्रेजों ने उन्हें हाजिर कराने का दबाव बनाना शुरू किया। अंग्रेजों को इसमें सफलता भी मिली और आजादी के इस दीवाने को देवली (राजस्थान) के रेगिस्तानी इलाके की जेल में डाल दिया। क्रांतिकारी की पत्नी इस सदमे को बर्दाश्त नहीं कर सकीं और अल्पायु में ही अपने दो वर्ष की इकलौती बिटिया इंदिरा को छोड़कर चल बसीं। बेटे व बहू के सदमे को उनके पिता भी बर्दाश्त नहीं कर सके। वह भी चल बसे। इस दुखद मौके पर भी बंदी विश्वनाथ राय को अपने पिता के अंतिम क्रिया में शामिल होने का अवसर नहीं मिला। चंद्रशेखर आजाद की शहादत के बाद देवली जेल से आठ वर्षों के लंबे अंतराल के बाद वह पुन: चंद्रशेखर आजाद की सोशलिस्ट रिपब्लिक आर्मी के लिए सक्रिय रूप से कार्य करने लगे। अब अंग्रेजी हुकूमत ने उन्हें अपने लिए बड़ा खतरा मान लिया। उनकी अनुपस्थिति में खुखुंदू स्थित उनके परिवार पर अंग्रेजों ने अपना कहर बरपाया। उनके घर में लूटपाट की। इस यातना से उनका परिवार गांव में ही दूसरों के घर में ही छिपकर रहने को विवश हो गया। यहां तक कि उनकी ससुराल उजियार घाट (बलिया) में उनके जज पद पर कार्यरत ससुर तक पर अंग्रेजों ने दबाव बनाया कि वो अपने क्रांतिकारी दामाद को समर्पण करा दें। अंग्रेजों की यह युक्ति भी काम नहीं आई। लेकिन 1940 में विश्वनाथ राय आखिरकार एक बार फिर पकड़ लिए गए। इस बार उनके कारावास की अवधि छह वर्ष थी। इन छह वर्षों में उन्होंने खुखुंदू में अपनी धीरे-धीरे बड़ी हो रही बच्ची इंदिरा राय से पत्राचार करना शुरू कर उनमें भी पत्रों के माध्यम से देश प्रेम की भावना का संचार करते थे। 1940-46 के कारावास के दौरान ही विश्वनाथ राय जी का संपर्क उसी जेल में बंद जवाहर लाल नेहरू से हुआ। उनके विचारों से प्रभावित होकर विश्वनाथ राय ने पुन: गांधीवादी रास्ते पर चलने का निर्णय लिया। 1944 में कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण कर ली।

आजादी के बाद भी उनमें देश प्रेम की भावना में कमी नहीं आई। 1952 से 1977 तक लगातार लोकसभा के निर्वाचित संसद सदस्य रहने के बाद भी समाजसेवा को प्राथमिकता में रखा। शिक्षा के विस्तार में उन्होंने पैतृक गांव खुखुंदू में शिवाजी बाल विद्यालय शिवाजी इंटर कॉलेज की स्थापना की। पिता के सपनों को साकार करने के लिए उन्हीं के पद चिह्नों पर चलते हुए उनके दूसरे नंबर के सुपुत्र अजय शर्मा ने शिक्षा के क्षेत्र में विस्तार करते हुए डिग्री कॉलेज की स्थापना कराई। वर्तमान में अजय शर्मा इन कॉलेजों के प्रबंधक हैं। 1906 में जन्मे क्रांतिकारी विश्वनाथ राय ईमानदार सांसद के रूप में 25 वर्ष के गौरवमयी जीवन जीते हुए आजाद भारत में 28 अगस्त 1984 को अपनी अंतिम सांस लेकर इस दुनिया से अलविदा हो गए। केंद्र में रही कांग्रेस सरकार ने स्वर्गीय राय के नाम से डाक टिकट भी जारी कराया है।

स्व. विश्वनाथ राय अपनी ईमानदारी और लोकप्रियता की बदौलत कांग्रेस पार्टी से 1962 के लोकसभा के आम चुनाव में राम मनोहर लोहिया के साथ सोशलिस्ट पार्टी के दूसरे नंबर के नेता कहे जाने वाले आर्थिक चिंतक अशोक मेहता को भारी मतों से देवरिया के सरजमीं पर चुनाव हराकर अपना लोहा मनवाया था। स्व. राय ने एक अलग पहचान बनाई थी। उनके निधन के समय उनके बैंक खाते में 35 हजार रुपये थे। इसके अलावा उनके पास पिता द्वारा छोड़ी गई अचल संपत्ति के अलावा क्रय और अर्जित की गई कोई संपत्ति नहीं थी।

आठ अगस्त 1942 को जब बंबई (अब मुंबई) के ग्वालियर टैंक मैदान में कांग्रेस के अधिवेशन में अंग्रेजों भारत छोड़ो प्रस्ताव पर मुहर लगी तो अंग्रेजी हुकूमत ने महात्मा गांधी, पंडित नेहरू समेत अनेक शीर्ष नेताओं को बंदी बना लिया और जेल में ठूंस दिया। इन नेताओं की गिरफ्तारी की सूचना जैसे ही देश के अलग-अलग हिस्सों में पहुंची क्रांतिकारियों के साथ आम जन में भी अंग्रेजी शासन के प्रति रोष भड़क गया। तत्कालीन संयुक्त प्रान्त के गोरखपुर जिले में आजादी की लड़ाई की चिंगारी पहुंची तो इलाका सुलग उठा। अंग्रेजी हुकूमत का प्रतीक रतसिया कोठी उस समय क्रांतिकारियों के निशाने पर था।

मैं भारत हूं

श्रीमती पूजा कुमारी, शाखा प्रबंधक,
शाखा कैथोली, बलिया, देवरिया

मैं भारत हूँ.

वह भारत जिसका अपना गरिमामयी इतिहास रहा है. कभी मैं सोने की चिड़िया कहलाती थी. मैं विश्वगुरु पूरे विश्व को मैंने "वसुधैव कुटुंबकम" का पाठ पढ़ाया. मतलब पूरा विश्व भाई बहन हैं, मेरे ही पुत्र ने धर्म मंच से भाइयो और बहनो का नारा दिया. मैं धर्म गुरु थी.

बुद्ध, जैन और सनातन धर्म की धात्री मैं ही थी. जब पूरा विश्व अज्ञान के अंधकार में था तब मैंने तक्षशिला और विक्रमशिला की नींव डाली. मेरा साहित्यिक इतिहास भी आकाश की उचाईयों से कहीं ज्यादा विस्तृत रहा है. मैंने विश्व को गीता, पुराण, वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण स्मृतियां और अर्थशास्त्र दिया है. मैंने अकबर महान और सम्राट अकबर भी देखा है. मेरे गर्भ में बहुत से बहुमूल्य धातुएं थीं और धरा पर उपजाऊ लहलहाते खलिहान, जिसकी हरियाली ने विदेशी आक्रांताओं को मेरी तरफ आकृष्ट किया, विश्व को मसाले का स्वाद मैंने ही दिया. मेरी इसी ख़जाने को लूटने के लिए कई विदेशी आक्रांताओं ने मुझपर दांव फेंके. मैं विविधता से भरी थी, और कई विदेशी कंपनियों ने मुझपर बारी-बारी अधिकार के लिए हमले भी किये, अंततः मैं अपने कुछ लालची पुत्रों के कारण गुलामी की बेड़ियों में जकड़ गई, मनुष्य जन्म से ही स्वतंत्र पैदा हुआ है, स्वतंत्रता प्रकृति का नियम है और इसी नियम के विरुद्ध मैं सोने की चिड़िया पिंजड़े में कैद थी, मैंने 190 वर्षों की लम्बी दासता देखी, उस दासता में मेरे सुपुत्रों पर कितने अत्याचार हुए, मुझे आजादी दिलाने में मेरे अनगिनत पुत्रों ने बलिदान दिए, आजादी की यात्रा में मेरी भूमि जालियांवाला बाग और चौरी-चौरा से लहू लुहान हुई, मैं सत्याग्रह और अहिंसा की साक्षी रही, हद तो तब हुई जब नमक जैसे बुनियादी चीज को भी ब्रिटिश सरकार टैक्स के दायरे में लेकर आई. तब मेरे वीर पुत्रों ने इस जुल्म के विरुद्ध दांडी की यात्रा कर नमक सत्याग्रह किया जहां पूरी दुनिया ने ब्रिटिश साम्राज्य की क्रूरता देखी, वहीं दुनिया ने मेरी और मेरे पुत्रों की शहनशीलता देखी. पूरे भारत में इस सत्याग्रह के बाद देखते ही देखते आंदोलन की लहर फैली.

हमारी आजादी अनमोल है, यह आजादी मुझे दान में नहीं मिली. एक योद्धा की भांति मैंने इसे जीता है, कोई मुझसे पूछे इस स्वतंत्रता के लिए मैंने कितने मूल्य चुकाये, मेरे अनगिनत पुत्रों ने स्वतंत्रता की यज्ञ वेदिका में अपने प्राणों की आहुति दी, मेरे पुत्रों ने मुझे अंग्रेजों से पूर्ण स्वराज की मांग की, मेरे पुत्र ने अहिंसा की राह अपनाते हुए बेरहम ब्रिटिश सरकार को घुटनों पर टिकने को मजबूर कर दिया. अंततः, अहिंसा की राह पर चलते हुए मेरे पुत्रों ने मुझे 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र कराया.

कई विद्वानों के शब्दों में स्वतंत्रता की कई व्याख्या है, कुछ को बंधन से मुक्त होना, अपनी इच्छानुसार कार्य करने की आजादी ही स्वतंत्रता है, कुछ को लगता है सम्पूर्ण बंधनों से मुक्त, कुछ को लगता है अनुचित बंधनों से मुक्त होना ही आजादी है, पर सही मायनों में स्वतंत्रता का अर्थ पूर्ण विकास के अवसर प्राप्त होना ही है, स्वतंत्रता भी सामूहिक है, नागरिक प्राकृतिक राजनीतिक और आर्थिक. सच ही कहते हैं स्वतन्त्रता का मतलब और महत्त्व वही बता सकता है जो कभी गुलाम रहा हो.

हमारे ही कुछ प्रान्त पथभ्रष्ट हो भारत में आजादी मांग रहे थे. आजाद भारत में आजादी, इसका कोई स्थान नहीं था, मेरे ही विद्वान पुत्र ने मुझे खंडित होने से बचाया और मेरी आस्था और अखंडता बचाये रखी. भारत में रहने वाला हर व्यक्ति आजाद है, सबके पास आजादी है. आजादी का सही अर्थ खुद को जान लेना है. खुद का बोध होना है. अगले वर्ष मैं आजादी का हीरक वर्ष मनाने जा रही हूँ इस वर्ष मैं आजादी का अमृत महोत्सव मना रही हूँ जो 12 मार्च 2021 से प्रारम्भ हुआ. आज लगभग 90% मेरी आबादी ऐसी है जिसने मेरी वीर गाथा देखी नहीं. बस कहानियों के माध्यम से सुनी है. उन्हें अपने गौरवशाली इतिहास की झलक दिलाना ही इसका उद्देश्य है, यह युवाओं को देश भक्ति के भाव से ओत प्रोत करने के लिए किया गया है. यह अमृत महोत्सव युवाओं को शौर्य पराक्रम और ज्ञान विज्ञान कला से रचे-बसे इतिहास से रूबरू कराने के लिए ही शुरू हुआ.

आज मैं आजाद हूँ पर क्या पूर्ण रूप से आजाद हूं?
एक माँ के लिए आजादी सही मायनो में तभी होती है जब उसके सारे पुत्र खुशहाल हों, सभी समान हों, कोई जब अभी भी बाल विवाह, दहेज़ प्रथा, भ्रूण हत्या, जैसी कुरीतियाँ यहाँ हैं तो मैं आजाद कहां? अपनी परम्परा को निभाना अच्छी बात है पर कुरीतियाँ सुधारना उससे भी अच्छी बात है. अभी भी धन का असमान वितरण है धन कुछ लोगों तक सीमित है जो गलत है इसका सही और न्यायसंगत तरीके से वितरण ही सही मायने में स्वतंत्रता है. जश्न-ए-आजादी की 75 वीं वर्षगांठ को धूमधाम से मनाना और गांधीजी की दांडी यात्रा की 91 वीं वर्षगांठ को मनाते हुए आजादी की 75वीं वर्षगांठ मनाना ही इसका उद्देश्य है, यहाँ सती प्रथा तो रुकी फिर भी महिलाओं का उत्थान नहीं हुआ. संसद में ही आधी आबादी रखने वाली महिलाओं का प्रतिनिधित्व नगण्य है.

मैं आजाद हूँ पर मेरी आजादी सही मायनो में तभी आएगी जब मेरे आंचल के सारे बच्चे खुश हों, सबको समान शिक्षा मिले, इस हीरक वर्ष में मेरी अपेक्षा अपनी सन्तानों से बहुत है, इतनी कि मैं अपनी गौरव फिर से प्राप्त करूँ, फिर से एक बार विश्व गुरु कहलाऊं और यह तभी संभव है, जब मेरे सारे सपूत अपने दायित्वों का सही से अनुपालन करेंगे. आजादी के इन वर्षों में मेरे बच्चों की संख्या 34 करोड़ से 137 करोड़ हो गई, जिनकी औसत आयु 34 से 69 तो हुई पर फिर भी अभी बहुत सी बुनियादी जरुरत की चीजें नहीं मिल पाई हैं. आजादी के वक्त आम आदमी की औसत आय 274 रुपए थी जो बढ़ कर 1.26 लाख रुपए हो गई. इन वर्षो में बहुत कुछ सुधरा. फिर भी मेरी अपेक्षाएं मेरे बच्चों से काफ़ी है. बेरोजगारी दर लगभग 7% है. इस वक्त प्रत्येक 1313 व्यक्ति पर 1 डॉक्टर है जबकि 1000 पर 1 होना चाहिए था. इस वैश्विक महामारी ने स्वास्थ्य विभाग की संरचना के ढांचे में और सुधार की आवश्यकता को पुख्ता किया. वैसे हमारी स्वास्थ्य विभाग ने बहुत अच्छा काम किया. वैसे बाल मृत्यु दर 146 से घट कर 32 हो गई. आजादी की तुलना में 10 गुणा विद्यालयों की संख्या बढ़ी है. अपराध का ग्राफ भी 9% बढ़ा है, गरीबी रेखा के नीचे जो आजादी के वक्त 80% की आबादी थी, अब लगभग 23% आबादी है. जीडीपी में कृषि का भार अब कम हो कर उसकी जगह सेवा क्षेत्र का हिस्सा बढ़ा है. पहला बजट जो 197 करोड़ का था, अब लगभग 35 लाख करोड़ का हो गया.
इस जश्न-ए-आजादी के लिए मुझे विभाजन विभीषिका झेलनी पड़ी. मेरे बच्चे आपस में ही लड़े और उनके रक्त से मेरी धरती पट गई, वो मंजर आज भी उन लोगों के लिए जिन्होंने इसे देखा, दु:स्वप्न है.

मेरी अपेक्षाएं नये भारत से नई हैं. मेरी अपेक्षा है कि बाल मृत्यु दर शून्य हो, हम विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनें, बेरोजगारी ख़त्म हो, गरीबी रेखा के नीचे कोई ना रहे और मैं पुन: सोने की चिड़िया बनूं. अंत में मैं अपनी स्वरचित दो पंक्तिया लिखूँगी:

मेरी आजादी का हीरक वर्ष खास है
पूरी हुई क्या जो हमारी आस है
कुछ हुई पूरी कुछ रही अधूरी
कुछ ने हमारे सामने तोड़े दम
क्या देश है हमारा और देश के हैं हम?
अगर देश है हमारा
तो हमने इसे क्यू नहीं संवारा?
अगर हम देखें अपनी आत्मा टटोलकर
क्या देशभक्तों ने सही किया देश हम पे छोड़कर?

अगर वो आते
देश की हालत सह नहीं पाते
वक्त है हम एक होकर फिर भरें उड़ान
फिर दुनिया गाये हमारा गुणगान.

मन समर्पित तन समर्पित और ये जीवन समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती तुझे कुछ और भी दूं.

भारतीय अर्थव्यवस्था में एम.एस.एम.ई.-- चुनौतियाँ व भविष्य

रजनी कुमारी, वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, देवरिया

एम.एस.एम.ई. का तात्पर्य है - सूक्ष्म लघु व मध्यम उद्योग। औद्योगिक क्रान्ति से पूर्व न केवल भारत बल्कि विश्व के सभी विकसित एवं विकासशील देशों में अर्थव्यवस्था का मूल आधार एम. एस. एम. ई. ही था। एक समय भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था, पश्चिमी यूरोप के कई देशों में विशेषत: इंग्लैण्ड में यहाँ के एम.एस.एम.ई. द्वारा बनाया गया उत्पाद निर्यात किया जाता था। देश की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था कृषि एवं एम.एस.एम.ई. पर ही टिकी थी, परन्तु औद्योगिक क्रान्ति के पश्चात औपनिवेशिक शासन होने के कारण कुटीर लघु एवं मध्यम उद्योगो द्वारा उत्पादित वस्तुओं के निर्यात पर करों को बढ़ा दिया गया तथा भारतीय बाजारों को निम्न आयात शुल्क पर विदेशी वस्तुओं से भर दिया गया। विदेशी वस्तुएं सस्ती एवं आकर्षक हुआ करती थी जिससे भारतीय वस्तुओं का मांग बाजार में कम हो गयी तथा भारतीय लघु एवं कुटीर उद्योगों का पतन शुरु हो गया । औद्योगिकरण के पश्चात बदती हुई जनसंख्या की आवश्यकताओं के पूर्ति एवं निम्न लागत पर वस्तुओं के उत्पादन हेतु बड़े - बड़े उद्योग स्थापित किये गये जिससे भारतीय एम. एस. एम. ई. का स्थान इन बड़े-बड़े उद्योगों ने ले लिया जिनका लक्ष्य अधिक से अधिक लाभ कमाना था।

जल्द ही इसके दुष्परिणाम निकलकर सामने आने लगे, जैसे एम. एस. एम. ई. इकाईयों के बन्द होने से बेरोजगारी की समस्या, शहरीकरण का बढ़ना, गरीबों व अमीरों के बीच दूरियों का बढ़ता जाना, शहरीकरण का प्रवास की समस्या आदि।

जल्द ही समस्या लोगों के समझ में आने लगी जिसके विरुद्ध आन्दोलन शुरु हो गये जिसे स्वदेशी आन्दोलन का नाम दिया गया। स्वदेशी आन्दोलन ने लघु एवं कुटीर उद्योगों की उखड़ती श्वास में प्राणवायु का कार्य किया एवं अनेको एम.एस.एम.ई.. को पनपने दिया । आजादी के बाद के एम. एस. एम. ई. को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने भी अनेक प्रयास किये । इन एम. एस. एम. ई. को फलीभूत करने में अनेक क्रान्तियों जैसे - श्वेत क्रान्ति, पीली क्रान्ति,, नीली क्रान्ति, हरित क्रान्ति आदि के भी योगदान रहे हैं।

भारत में एम. एस. एम. ई. की महत्ता को देखते हुए एक अलग मंत्रालय का गठन किया गया है, साथ ही सूक्ष्म , लघु एवं मध्यम उद्यम विकास अधिनियम - 2006 के तहत इसे कानूनी मान्यता मिली है. एम.एस.एम.ई. उद्यमशीलता एवं नवीनता की एक नर्सरी है। पूर्व में एम,एस.एम.ई. के तहत विनिर्माण एवं सेवा क्षेत्र में निवेश के आधार पर अलग-अलग परिभाषित किया गया था परन्तु आज इसकी महत्ता एवं इसे और सदृढ बनाने के लिए सेवा क्षेत्र एवं विनिर्माण क्षेत्र में अन्तर को समाप्त कर दिया गया। साथ ही एक नया मानदंड टर्नओवर (कुल बिक्री) को जोड़ दिया गया है., जैसे कि सूक्ष्म उद्यम के लिए निवेश की सीमा 25 लाख से बढ़ाकर 1 करोड़ कर दिया गया है तथा टर्न ओवर 5 करोड़ वार्षिक निर्धारित किया गया है., उसी प्रकार लघु उद्यम में निवेश की सीमा 5 करोड़ से बढ़ाकर 10 करोड़ व टर्नओवर 50 करोड़ एवं मध्यम उद्यम के लिए निवेश की सीमा 10 करोड़ से बढ़ाकर 20 करोड़ व टर्नओवर 100 करोड़ वार्षिक कर दिया गया है जिससे इन एम.एस.एम.ई, उद्यम ईकाईयों को बड़े उद्योगों का सामना करने में अपने उत्पादों का मात्रात्मक एवं गणात्मक सुधार करने में सहायता मिलेगी।

आज एम.एस.एम.ई, के कारण ग्रामीण क्षेत्रों म रोजगार में वृद्धि हुई है। प्रवास की समस्या कम हुई है। वर्तमान में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम इकाईयां देश की जी.डी.पी. का लगभग 8 फीसदी विनिर्माण उत्पादन का 45 फीसदी और निर्यात में 40 फीसदी का योगदान देते हैं, ये उद्योग कृषि के बाद सर्वाधिक रोजगार देने वाले संसाधन हैं। वर्तमान में देश में 6000 प्रकार से अधिक एवं 36 लाख लगभग एम.एस.एम.ई. उद्यम इकाईयां कार्यरत हैं जो 80 लाख से ज्यादा लोगों को रोजगार देने में सक्षम है। आज विकास के बजाय समावेशी विकास की जरुरत है जिसके लिए एम.एस.एम.ई. बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

हालांकि इसमें और सुधार की आवश्यकता है जैसे कि नई तकनीकी के प्रयोग पर जोर वैश्विक प्रतिस्पर्धा में सामना करने के लिए सरकार का सहयोग कार्यरत पूंजी की कमी, कुशल कार्यशक्ति की कमी आदि।

शेष अगले पृष्ठ पर

एम. एस. एम. ई. का महत्व चीन व भारत के उदाहरण से समझा जा सकता है क्योंकि दोनों ने ही विकास के रास्ते पर एक साथ चलना प्रारम्भ किया पर आज चीन की अर्थव्यवस्था भारत से बहुत आगे है इसका कारण है चीन द्वारा एम. एस. एम. ई. को बढ़ावा दिया गया | आज चीन से वैश्विक निर्यात में एम.एस.एम.ई. का योगदान 70 फीसदी से अधिक है. भारत जैसे विकासशील देश व बढ़ती जनसंख्या को देखते हुए आज एम. एस. एम. ई. को विशेष सहायता देकर विकास रुपी गाड़ी को एक इंजन के रूप में स्वीकार करने की जरूरत है जिससे कि गरीबी, भूखमरी, बरोजगारी की समस्या से निजात पाया जा सके।

आज कोविड -19 महामारी के कारण विश्व की अर्थव्यवस्था अपनी पटरी से उतर चुकी है जिससे भारत भी अछूता नही है अत: इसे पटरी पर लाने के लिए एम.एस.एम.ई. जैसा इंजन ही कारगर साबित होगा जो देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ आयाम दे सके। वर्तमान में एम.एस.एम.ई. में जान फूंकने के लिए पिहले कुछ सालों से सरकार लगातार प्रयासरत हैं जैसे कि मुद्रा ऋण योजना, स्टार्टअप इण्डिया, स्टैण्डअप इण्डिया, मेक इन इण्टिया, वोकल फॉर लोकल, आदि के माध्यम से वित्तीय सहायता व अन्य सुविधाओं का महत्वपूर्ण योगदान है.

12 मई 2020 को भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा आत्मनिर्भर भारत अभियान की शुरुआत की गई जिसके तहत 20 लाख करोड़ रुपये का राहत पैकेज का ऐलान किया गया जिसके तहत 3 लाख करोड़ रुपये का बिना गारन्टी लोन सरकार द्वारा एम.एस.एम.ई. को दिया जायेगा अर्थात इसका गारण्टर सरकार स्वयं होगी, यह एक सराहनीय एवं साहसिक कदम है जो एम. एस.एम.ई. के लिए मील का पत्थर साबित होगा क्योंकि कोविड -19 वैश्विक महामारी में देश में लॉकडाउन की स्थितियाँ उत्पन्न हुई,, आर्थिक मंदी के कारण बहुत सारे एम.एस.एम.ई. बुरी तरह प्रभावित हुए और बन्द होने की कगार पर थे। सरकार का यह कदम इन एम.एस.एम.ई. उद्यम ईकाईयों के लिए किसी संजीवनी बूटी से कम नहीं है जो उनको सुदृढ पुर्नगठित एवं फलीभूत होने के लिए संरक्षण प्रदान करेगा।

सन् 2022 में आजादी की जब हम 75वीं वर्षगांठ मनाएंगे तो सही मायने में गाँधी जी के सपनों का भारत होगा। भारत का विकास एक ऐसे इंजन के हाथों में होगा जहाँ सबके हाथ में काम होगा, हर हाथ को काम । जहाँ गरीबी कम होगी,, ग्रामीणों का रोजगार की तलाश मे शहरों में प्रवास कम होगा, ग्रामीण क्षेत्रों में ही रोजगार के पर्याप्त संसाधनो की व्यवस्था हो सकेगी. साथ ही साथ पर्यावरण संरक्षण एवं सुधार की प्रक्रिया भी गतिमान हो सकेगी । ग्रामीण क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था के विकास से अमीरी - गरीबी की असमानता को कम करने का प्रयास किया जा सकेगा। | कामगारों को अपने गाँव जिला या राज्य में ही रोजगार मिल सकेगा।

गाँधी जी भी मृत्यपर्यन्त कुटीर उद्योगों को बढावा देने के लिए लगातार प्रयासरत रहे क्योंकि कुछ समय के लिए हमने भी अपने कुटीर उद्योगों को दोयम दर्जे का सम्मान दिया था. लेकिन हमने अपनी गलती को सुधारते हुए हम जल्द ही पुनः वापस आकर अपने लघु एवं कुटीर उद्योगों के संरक्षण में प्रयासरत हैं.

आज 34 वर्ष बाद आई नई शिक्षा नीति में कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए व्यावहारिक शिक्षा पर भी जोर दिया गया जो प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी की कौशल विकास योजना को एक नया आयाम प्रदान करेगा जो कुशल मानव पूंजी तैयार करने में मील का पत्थर साबित होगा एवं एम.एस.एम.ई. ईकाईयों के लिए उत्प्रेरक का कार्य करेगा।

भारत एक कृषि प्रधान देश है अतः यहाँ विकास का ईंजन दो ही हो सकता है, या तो कृषि या लघु उद्योग। वर्तमान में कृषि का योगदान घटता जा रहा है ऐसे में एम. एस. एम. ई. ही एक मात्र संसाधन है जिन्हें भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास का इंजन बनाया जा सकता है जिसके माध्यम से स्वयं सहायता समूह व स्वरोजगार को बढ़ाकर कृषि को भी लाभकारी बनाया जा सकता है क्योंकि एम.एस.एम.ई उद्यमों के लिए कच्चे माल, कृषि व खनन से ही प्राप्त होगें। इस प्रकार एम.एस.एम.ई..अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए भविष्य के लिए एक और इंजन तैयार कर सकता है जिससे कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत किया जा सके। आमनिर्भर भारत का सपना अर्थात अपनी आवश्यकताएँ स्वयं द्वारा उत्पादित वस्तुओं के माध्यम से पूरा करना, आयात पर निर्भरता कम करना अर्थात लोकल के लिए आवाज (वोकल फॉर लोकल) का लक्ष्य तभी साकार होगा जब भारत एम.एस.एम.ई. को मुख्य इंजन मानेगा।

अंत मैं जिस प्रकार किसी डूबती नाव को एक ताकतवर इंजन ही बाहर निकाल सकता है, उसी प्रकार आज भारत की डगमगाती अर्थव्यवस्था को एम. एस.एम. ई. ही विकास का इंजन बनकर पटरी पर ला सकता है। देश की वर्तमान परिस्थिति में एम.एस.एम.ई. के सामने और भी अनेक चुनौतियां हैं जैसे-- कार्यशील पूंजी को झटका, वित्तीय तरलता संकट, मांग में कमी, आपूर्ति पक्ष में बाधा, श्रम की कमी। इन चुनौतियों को पार करते हुए सरकारी योजनाओं द्वारा एम.एस.एम.ई. सुदृढ़ किया जा रहा है जो भारतीय अर्थव्यवस्था में एम.एस.एम.ई. का उज्जवल भविष्य साकार होता दिखायी पड़ रहा है जिससे भारत में न कोई गरीब रहेगा, न कोई बेरोजगार रहेगा तथा देश की बढ़ती जनसंख्या का भार एम.एस.एम.ई. ही सहन करेगा। आत्मनिर्भर भारत अभियान एम.एस.एम. ही द्वारा चलेगा।

कोरोना वारियर्स के प्रति सम्मान

(मौलिक अभिव्यक्ति प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त)

श्री अमित सिंह, प्रबंधक,
क्षेत्रीय कार्यालय, देवरिया

उपरोक्त प्रथम चित्र को देखकर मन में सम्मान का भाव आता है क्योंकि उपरोक्त चित्र में हमारे सभी कोरोना वारियर अर्थात कोरोना योद्धाओं को आम जनता का सम्मान और आभार प्रदर्शित किया गया है. सन 2020 में कोरोना की विश्वव्यापी महामारी में तो हमारे योद्धाओं ने सराहनीय कार्य तो किया ही था किंतु इसी वर्ष अर्थात 2021 में कोरोना की दूसरी व पहले से प्रचंड लहर में भी हमारे कोरोना योद्धाओं ने पहले सी भी ज्याद सुदृढ़ और सक्षम तरीके से जनता व देश की सेवा की. कोरोना की दूसरी लहर किसी अदृश्य दुश्मन के खिलाफ लड़ी गई आजाद भारत का सबसे भीषण युद्ध था. जहाँ हजारों लाखों ने अपनों को खोया, वहीं इसी बीमारी में कितने ही अपने असहाय नजर आये और चाह कर भी संक्रमण के डर से कुछ न कर सके किंतु ऐसे माहौल में भी हमारे कोरोना योद्धाओं ने बिना विचलित हुए और धैर्य के साथ बिना जान की परवाह किये देश की सेवा की. यही कारण है कि देश के समस्त देशवसियों सहित हमारे देश के आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने भी अलग-अलग मंच पर कोरोना वारियर के कार्यों को सराहा और आभार प्रकट किया. सफाईकर्मी, डॉक्टर व पुलिस को वारियर के रूप में दर्शाया गया है किंतु सही मायनों में बैंक कर्मी व प्रशासनिक कर्मचारी व अधिकारी भी इस सूचीम में शामिल थे जिन्होंने देश में जारी युद्ध में अन्य कोरोना वारियर के साथ कंधे से कंधा मिला कर साथ दिया और आज इसी का नतीजा है कि देश वापस विकास की पटरी पर लौट आया है और कोरोना कुछ राज्यों को छोड़कर सभी राज्यों में नियंत्रण में है.

ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली

(मौलिक अभिव्यक्ति प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त)

श्री अमित मिश्रा, कृषि वित्त अधिकारी,
क्षेत्रीय कार्यालय, देवरिया

उपरोक्त प्रदर्शित चित्र में बच्चे द्वारा ऑनलाईन कक्षा लेते दर्शाया गया है. ये दृश्य विज्ञान एवं प्रोद्योगिक के द्वारा सम्भव हुआ एवं आधुनिक भारत के सुखद दृश्य को दर्शाता है. उपरोक्त चित्र की कुछ वर्षों पूर्व कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, किंतु इस कोरोना महामारी ने हमारी जीवनशैली को पूरी तरह से बदल कर रख दिया. यह परिस्थिति कोरोना काल का ही परिणाम कहा जा सकता है. डिजिटाइजेशन भारत में पहले से तीव्र गति से आम जन में फैल रहा था किंतु कोरोना काल ने इसे और तीव्र कर दिया. संक्रमण के डर से लोग ऑनलाईन प्लेटफॉर्म का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करने लगे, चाहे ऑनलाईन पढ़ाई हो, ऑनलाईन खरीददारी हो, ऑनलाईन बिल भुगतान हो या घर से नौकरी करना हो.

चूँकि बच्चों की वैक्सीन उपलब्ध न होने के कारण एवं बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होने के कारण कई स्कूलों ने बच्चों को ऑनलाईन माध्यम से शिक्षा देने का प्रयोग किया, जो सफल रहा. इस पढ़ाई का बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है. बच्चे पहले से अधिक जागरुक व रचनात्मक हुए हैं, क्योंकि घर पर बच्चों के साथ अभिभावक भी मौजूद होते हैं. अतः शिक्षकों की शिक्षा में भी सुधार देखा गया है. बच्चे बिना तनाव के घर पर ही आसानी से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं.

कोरोना महामारी

(मौलिक अभिव्यक्ति प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार प्राप्त)

श्रीमती अनामिका मल्ल, वरिष्ठ प्रबंधक,
क्षेत्रीय कार्यालय, देवरिया

वर्ष 2020 से पूरा विश्व कोरोना महामारी से जूझ रहा है. इस महामारी में जहाँ एक ओर लोग इस महामारी से पीड़ित हैं वहीं दूसरी ओर हमें इस महामारी से राहत दिलाने के लिये ऐसे भी कर्मवीर हमारे देश में हैं जिन्होने अपनी जान की परवाह न करते हुए कोरोना पीड़ित लोगों की सहायता किया है और कर रहे हैं. (पुलिस, डॉक्टर, नर्स, सफाईकर्मी एवं अन्य सामाजिक सेवा कर्ता) इसके ज्वलंत उदाहरण हैं. इन्होंने हमें अपने हाथोंहाथ उबार लिया. इनकी भूमिका सराहनीय, अनुपम एवं अनुकरणीय है, जिन्होंने जाति धर्म सम्प्रदाय से ऊपर उठकर नि:स्वार्थ एवं पुनीत भाव से अपनी सेवा में जुटे रहे हैं.

हम सब इनका हृदय से अभिवादन एवं स्वागत करते हैं एवं उनसे हम स्वयं में प्रेरणा ग्रहण करते हैं.

हम इतना तो कर सकते हैं

- हिन्दी में हस्ताक्षर करें.
- हिन्दी पत्रों का उत्तर हिन्दी में दें.
- हिन्दी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त करें.
- हिन्दी भाषी राज्यों को भेजे जाने वाले लिफाफों पर हिन्दी में पते लिखें.
- परिपत्र, प्रशासनिक रिपोर्ट, प्रेस विज्ञप्ति, करार, निविदा प्रपत्र, सूचना को अनिवार्य रूप से हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी करें.
- मुलाकाती कार्ड, रबर स्टैम्प, नाम पट्ट, डीओ लेटर हेड दोनों भाषाओं (हिन्दी और अंग्रेजी) में बनवायें और उसका प्रयोग करें.
- विभाग के सभी कम्प्युटरों पर बहुभाषी शब्द-संसाधक युनिकोड लोड करें.
- फाईल कवर, स्टेशनरी आदि पर कम्पनी का नाम द्विभाषी (हिन्दी और अंग्रेजी) में ही दें.
- हिन्दी में हस्ताक्षरित अंग्रेजी के पत्रों का उत्तर भी हिन्दी में ही दें.
- उपस्थिति विवरण, जन्मदिन, विवाह इत्यादि बधाई पत्र भेजने जैसे काम हिन्दी में करें.
- हिन्दी प्रतियोगिताओं में भाग लें.
- हिन्दी पुस्तकालय की पुस्तकों, समाचार पत्र व पत्रिकाओं का लाभ उठायें.
- छोटी-छोटी टिप्पणियां हिन्दी में ही लिखने का प्रयास करें.
- फाइलों के ऊपर विषय हिन्दी-अंग्रेजी में लिखें.
- अपने साथियों को हिन्दी में काम करने की प्रेरणा दें.

हिन्दी वर्चुअल कार्यशाला दि. 18.12.2021

दि. 18.12.2021 को आयोजित ऑनलाईन हिन्दी कार्यशाला के दौरान ऑनलाईन क्लास लेते हुए सुश्री शुभ लक्ष्मी शर्मा, राजभाषा अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यालय गोरखपुर/देवरिया

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान श्री सुशील कुमार उपाध्याय, क्षेत्रीय प्रबंधक स्टाफ सदस्यों को सम्बोधित करते हुए.

भ्रष्टाचार मुक्त भारत

शुभ लक्ष्मी शर्मा, राजभाषा अधिकारी,
क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर

लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल जी ने कहा है- "**यदि हम अपने कर्तव्यों से मुंह मोड़ते हैं तो ईश्वर के गुनहगार बनते हैं.**"

भारत की आजादी के बाद हमारा देश एक प्रगतिशील और बढ़ती अर्थ्व्यवस्था के रूप में उभरा. देश में विकास के साथ ही भ्रष्टाचार से निपटने के लिये वर्ष 1964 में केंद्रीय सतर्कता आयोग की स्थापना की गई जिसके अंतर्गत कोई भी सामान्य नागरिक भ्रष्टाचार के विरुद्ध शिकायत दर्ज करा सकता था. इसे संसद की अधिनियम 2003 के तहत संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया.

आज के परिप्रेक्ष्य में भ्रष्टाचार के फलस्वरूप देश को भारी नुकसान का दंश झेलना पड़ रहा है. जिसके अंतर्गत बेरोजगारी, ईमानदार अधिकारियों को जबरन भ्रष्टाचार में लिप्त किया जाना, नैतिक पतन, अनुशासनहीनता, कर्तव्यहीनता, उत्तरदायित्यों के प्रति उदासीनता, निष्ठा की कमी, आदि बातें हैं जो देश के विकास में बाधक हैं.

भ्रष्टमुक्त भारत के लिये आज हमारे महामहीम प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदीजी ने देश के आजादी के 75 वर्ष के अवसर पर आजादीके अमृत महोत्सव को मनाने की घोषणा की है जिसके तहत स्वतंत्र भारत @75 सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता: Independent India@75 : Self Reliance with integrity का नारा दिया है जिसमें यह भावना निहीत है कि इन 75 वर्षों में हम सत्यनिष्ठा से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहे हैं.

भ्रष्टाचार की चुनौतियों से निपटने के लिये भारत सरकार ने विभिन्न विभागों के अधिकारियों/कर्मचारियों से सम्बंधित भ्रष्टाचार नियंत्रण संस्था के रूप में अरैल 2004 में केंद्रीय सतर्कता आयोग के अंतर्गत किसी भी भ्रष्ट अधिकारी की शिकार्यत लिखित रूप में दर्ज करने के लिये "लोकहित प्रकटीकरण और मुखबित संरक्षन संकल्प" गठित की गयी जिसे (पीआईडीपीआई) PIDPI-Public Interest Disclosure and Protection of Informer) को प्राधिकृत किया गया. इसके अंतर्गत-

1. जनहित प्रकटीकरण और मुखबिरों के संरक्षण के संकल्प के तहत की गयी शिकायतों को पीआईडीपीआई शिकायतें कहा जाता है.
2. यदि पीआईडीपीआई के तहत कोई शिकायत की जाती है तो शिकायतकर्ता की पहचान गोपनीय रखी जाती है.
3. शिकायत, सचिव, केंद्रीय सतर्कता आयोग को सम्बोधित हो और लिफाफे पर "पीआईडीपीआई" लिखना चाहिये.
4. यह केवल केंद्र सरकार के अधिकारियों/कर्मचारियों के खिलाफ शिकायतों पर संज्ञान लिया जायेगा.

इस प्रकार भारत सरकार आज के परिप्रेक्ष्य में भ्रष्टाचार मुक्त भारत बनाने के लिये कटिबद्ध है. यद पूर्ण रूप से भ्रष्टाचार मुक्त भारत बनाने के लिये सबसे पहले हमें स्वयं को ईमानदार होकर पहल करनी होगी, तभी हम सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भर हो सकेंगे और स्वच्छ और स्वस्थ समाज की परिकल्पना को साकार कर सकेंगे. हम यह कह सकते हैं-

"देश के विकास के दर को बढ़ाना है तो भ्रष्टाचार मिटाना है"

"देशभक्ति भावनाओं का कोई क्षणिक उन्मादी विस्फोट नहीं अपितु जीवन भर का अनवरत अचल समर्पण है."

हमारे बैंक की व्यावसायिक वृद्धि

पूजा कुमारी, शाखा प्रबंधक,
कैथोली शाखा, बलिया, देवरिया

हमारा बैंक जिसने 1911 से आज तक 110 वर्षों का लम्बा सफर देखा है, इसने एक बैंक के साथ साथ लोगों के विश्वास की जमा पूंजी धरोहर के रूप में संजोए है.

हमारा बैंक एक आर्थिक वाणिज्यिक बैंक है, अन्य बैंकों की तरह हमारे बैंक का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना और व्यवसाय वृद्धि करना ही है.

व्यवसाय का अर्थ एक ऐसी आर्थिक क्रियाओं से है जिसमें लाभ कमाने के उद्येश्य से वस्तुओं और सेवाओं का नियमित रूप से उत्पादन क्रय-विक्रय विनियम और हस्तांतरण किया जाता है. व्यवसाय को हम तभी व्यवसाय कहेंगे जब उसमें उत्पादन से वितरण तक की सारी क्रियायें शामिल होंगी, व्यवसाय का अर्थ ग्राहकों की आवश्यकता की पूर्ति करते हुए लाभ कमाना है, पर एक राष्ट्रीय बैंक होने के कारँण जिसकी शाखायें भारत के सभी राज्यों में फैली हैं. हमें उन सभी व्यक्तियों के हितों को ध्यान में रखते हुए व्यवसाय वृद्धि करना है, जो समाय में आर्थिक रूप से कमजोर है. प्रश्न उठता है व्यवसाय वृद्धि कैसे करें? इसके लिये जो संकल्पना ला सकते हैं वह है RICE:

R (रीजन फॉर कमिंग) ग्राहक के आने का कारण
I (आईडिया) ग्राहक के क्या विचार हैं
C (कंसर्न) ग्राहक की क्या चिंता है
E (एक्स्पेक्टेशन) ग्राहक की क्या अपेक्षा है

हमें सबसे पहले शाखा में आये ग्राहकों के आने का कारण जानना होगा फिर उनका विचार जानना होगा और तब अपनी बैंकमें स्थापना से राष्ट्रीयकरण तक का दौर देखा है. कई जगहों पर हमारा बैंक लीड बैंक रहा है जिसकी शाखायें 4608 के आसपास और कुल सम्पति लगभग 3.7 करोड़ के पास है.

हमारे बैंक में हर उम्र के यथा एक अवयस्क से सुपर वरिष्ठ नागरिक तक का खाता है और हर वर्ग की अलग अलग चिंता और अपेक्षायें हैं पर सबसे मजेदार बात यह है कि हर वर्ग के लोगों के लिये हमारे पास उत्पाद हैं. वहीं हमारे बैंक का नेटवर्क इतना बड़ा है कि इसकी शाखायें उस गांव में जहँ पगडंदी का रास्ता है से मेट्रो तक फैला है. हर श्रेणी के ग्राहकों की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए लाभ कमाना कठिन है पर असम्भव नहीं है. हम अपने व्यवसाय में वृद्धि तभी कर सकते हैं जब हम अपने ग्राहकों को संख्या बढ़ाते हुए अपने उत्पादों की लागतों को कम करेंगे. हम सेंट्रलाइटों के लिये इस दौर में जहाँ लोगों की आवश्यकतायें नित नये आयाम ले रही हैं, कम खर्च में बैंक का व्यवसाय बढ़ाना नितांत आवश्यक है. इसके लिये हमें अपना सी.डी. अनुपात 60% करना होगा जिसके लिये ज्यादा चालू खाता खोलना होगा. जिससे बिना ब्याज दिये हमारी जमा बढ़े, क्योंकि चालू खाते पर ब्याज नहीं देना पड़ता है. ग्रामीण क्षेत्रों में भी सीडी खाते की संख्या बढ़ाने के लिये सी डी सक्षम खाता लाया गया है जो ग्रामीण व्यवसायी के अनुकूल है.

बैंकों बैंकों को वेतन (सैलेरी) खाता खोलना पड़ेगा ताकि हम क्रॉस सेलिंग कर सकें. बैंक की कमाई का बड़ा हिस्सा ऋण के बयाज से आता है तो इसके लिये हमें योग्य लोगों का चयन करते हुए आर.ए.एम. बढ़ाना होगा अर्थात रिटेल अग्रईकल्चर और एम एस एम ई जिससे बैंक का व्यवसाय बढ़े.

बैंक अगर कृषि ऋण, वीकर सेक्शन ऋण और एम एस एम ई ऋण देता है तो आर बी आई द्वारा निर्धारित लक्ष्य पूर्ण कर लेता है.

शेष अगले पृष्ठ पर

बैंक योग्य और मेधावी छात्रों को शिक्षा ऋण देकर अपना व्यवसाय बढ़ाते हुए निर्माण में योगदान दे सकता है. बैंक व्यवसाय में वृद्धि के साथ हमें इस व्यवसाय में पेनल्टी के तौर पर लगने वालीसेंध को भी रोकना होगा. जैसे एक छोटी सी छेद पूरी नाव को डुबो सकती है, हमें अपनी पेनल्टी और रेवेन्यू लीकेज को रोकना होगा.

इससे हम अपने बैंक और सरकार दोनों को लाभ पहुंचा सकते हैं.. आर.बी.आई. द्वारा नॉमिनेशन नहीं करने, के.वाई.सी. नहीं करने करेंसी चेस्ट के नियमों का उल्लंघन करने, शाखाओ6 को दैनिक नकद सीमा के भीतर कैश नहीं रखने आदि पर पेनल्टी लगाई जाती है, जिसे हम निर्धारित समय पर नियम अनुकूलकर कर बचा सकते हैं.

शाखाओं में महिषासुर की भांति बढ़ते एन.पी.ए. को रोकने का ब्रह्मास्त्र एन.डी.एन.डी. है, जिसे रिकवरी कैम्प के द्वारा लोगों को जागरुक कर बड़े स्तर पर एक्मुश्त समझौता किया जा सकता है, डूबे हुए पैसे को निकाल कर ही हम पीसीए से उबर सकते हैं.

साथ ही नये ऋण के पहले हमें ड्यू डिलिजेंस कर आकलन करना चाहिये ताकि अच्छे ग्राहकों का चयन करें. बैंक में व्यवसाय वृद्धि के लिये सबसे अच्छा और बिना अर्थिक जोखिम का व्यवसाय कमिशन आधारित व्यवसाय हैं. जैसे टाटा एआईए की पॉलिसी, बजाज और भारतीय जीवन बीमा की पॉलिसी आदि. इसके अतिरिक्त बैंक एल सी और बीजी निर्गत कर के भी नॉन फण्ड आधारित ऋण दे कर ब्याज कमा सकता है, वो भी बिना वित्तीय जोखिम के. हमारी बैंकिंग व्यवसाय में वृद्धि तभी होंगी जब ज्यादा संख्या में हर वर्ग युवा से लेकर पेंशनर तक को अपने बैंक और बैंकिंग उत्पाद से जोड़ सकेंगे. ए.टी.एम. जो आज की युवा की सबसे जरूरी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए इसे ऑगमेंटेड उत्पाद बनाना होगा ताकि नये युवा वर्ग बैंक से जुड़ें, क्योंकि विशेषतः पहला बैंक और पहला खाता हमेशा खास होता है.

हमें अपने बीसी को भी बैंकिंग उत्पादों से जागरुक करना होगा क्योंकि ये मुख्य धार से सीधे जुड़े होते हैं और जनसाधारण के घर घर तक इनकी पहुंच है. बैंक के काम में भी परदर्शिता लानी होगी ताकि लोगों का हमपर विश्वास और प्रगाढ़ हो.

इसके लिये विशेषत: युवाओं और उनकी आज की आवश्यकता जैसे नेट बैंकिंग, डिलीवरी चैनल को थोड़ा और सुगम बनाना पड़ेगा ताकि युवा से लेकर वृद्ध तक इसे उपयोग में ला सकें और ओरों को भी बता सकें. जैसा कि सत्य ही कहा गया है कि किसी भी उत्पाद का सबसे अच्छा विज्ञापन एक संतुष्ट ग्राहक ही होता है, जब कोई विद्यार्थी या युवा हमारी बैंक से जुड़ता है और अच्छा अनुभव करता है वह वृद्धावस्था तक इससे जुड़ा रहता है और अपने साथ अपने परिवार के अन्य लोगों को भी जुड़ने के लिये प्रेरित करता है. हमारी प्रतिस्पर्धा जिन राष्ट्रीयकृत और निजी बैंकों से है हमें उनके उत्पादों से उत्तम बनाना है ताकि लोग हमारे उत्पादों का ही चयन करें. हमें ग्राहकों तक इनके वितरण की व्यवस्था सुनिश्चित करनी पड़ेगी. हमें अपने बीसी को भी बैंकिंग उत्पादों से जागरुक करना होगा क्योंकि ये मुख्यधारा से सीधे जुड़े होते हैं और जनसाधारण के घर घर तक इनकी पहुंच है. बैंकोलं के काम में भी पारदर्शिता लानी होंगी ताकि लोगों का हमपर विश्वास और प्रगाढ़ हो.

हमारे कर्मचारियों की संख्या सीमित है और हमे इसी से कार्य लेना है. हमें अपने शाखा के हर कर्मचारी यहाँ तक कि दफ्तरी को भी तकनीकी से जोड़ना होगा, उन्हें भी प्रशिक्षण देना होगा, ताकि वो ग्राहकों से सीधे जुड़ सकें और उन्हें जागरुक कर बैंक की व्यवसाय को नया आयाम दे.

हमें लोगों को सुरक्षा बीमा, अटल पेंशन, पी.पी.एफ, सुकन्या खाता जैसे उत्पाद भी ग्राहकों को देने होंगे ताकि ग्राहक लम्बे समय तक हमसे जुड़ा रहे और हम अपना क्रॉस सेलिंग व्यवसाय बढ़ा सकें और सारे कर्मचारियों को आपस में समन्यवय करते हुए दल की भावना से व्यवसाय वृद्धि के लिये कार्य करना होगा.

खूनी हस्ताक्षर

पं. गोपाल प्रसाद व्यास

संकलनकर्ता : शुभ लक्ष्मी शर्मा,
राजभाषा अधिकारी
क्षे.का., गोरखपुर

वह खून कहो किस मतलब का, जिसमें उबाल का नाम नहीं
वह खून कहो किस मतलब का, आ सके देश के काम नहीं

वह खून कहो किस मतलब का जिसमें जीवन न रवानी है,
जो परवश होकर बहता है, वह खून नहीं है, पानी है

उस दिन लोगों ने सही-सही, ख़ूँ की क़ीमत पहचानी थी
जिस दिन सुभाष ने बर्मा में, मांगी उनसे क़ुर्बानी थी

बोले स्वतन्त्रता की ख़ातिर, बलिदान तुम्हें करना होगा
तुम बहुत जी चुके हो जग में, लेकिन आगे मरना होगा

आज़ादी के चरणों में, जो जयमाल चढ़ाई जाएगी
वह सुनो! तुम्हारे शीषों के फूलों से गूँथी जाएगी

आज़ादी का संग्राम कहीं, पैसे पर खेला जाता है
यह शीश कटाने का सौदा, नंगे सर झेला जाता है

आज़ादी का इतिहास, नहीं काली स्याही लिख पाती है
इसको लिखने के लिए, ख़ून की नदी बहाई जाती है

यूँ कहते-कहते वक्ता की, आँखों में ख़ून उतर आया
मुख रक्तवर्ण हो गया, दमक उठी उनकी स्वर्णिम काया

आजानु बाँहु ऊँची करके, वे बोले रक्त मुझे देना
उसके बदले में, भारत की आज़ादी तुम मुझसे लेना

हो गई सभा में उथल-पुथल, सीने में दिल न समाते थे
स्वर इंक़लाब के नारों के, कोसों तक छाए जाते थे

'हम देंगे-देंगे ख़ून'- शब्द बस यही सुनाई देते थे
रण में जाने को युवक खड़े तैयार दिखाई देते थे

बोले सुभाष- इस तरह नहीं बातों से मतलब सरता है
लो यह काग़ज़, है कौन यहाँ आकर हस्ताक्षर करता है

इसको भरने वाले जन को, सर्वस्व समर्पण करना है
अपना तन-मन-धन-जन-जीवन, माता को अर्पण करना है

पर यह साधारण पत्र नहीं, आज़ादी का परवाना है
इस पर तुमको अपने तन का, कुछ उज्ज्वल रक्त गिराना है

वह आगे आए, जिसके तन में ख़ून भारतीय बहता हो
वह आगे आए, जो अपने को हिन्दुस्तानी कहता हो

वह आगे आए, जो इस पर ख़ूनी हस्ताक्षर देता हो
मैं क़फ़न बढ़ाता हूँ; आए जो इसको हँसकर लेता हो

सारी जनता हुंकार उठी- 'हम आते हैं, हम आते हैं'
माता के चरणों में यह लो, हम अपना रक्त चढ़ाते हैं

साहस से बढ़े युवक उस दिन, देखा बढ़ते ही आते थे
और चाकू, छुरी, कटारों से, वे अपना रक्त गिराते थे

फिर उसी रक्त की स्याही में, वे अपनी क़लम डुबोते थे
आज़ादी के परवाने पर, हस्ताक्षर करते जाते थे

उस दिन तारों ने देखा था, हिन्दुस्तानी विश्वास नया
जब लिखा था रणवीरों ने, ख़ूँ से अपना इतिहास नया.

हिन्दी दिवस (14.08.2021 से 14.09.2021)

*दैनिक कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के प्रति जागरूकता तथा गति लाने के उद्देश्य से हमारे बैंक के सभी शाखा कार्यालयों में इस वर्ष **14 अगस्त, 2020 से 14 सितम्बर, 2021** तक **'हिन्दी माह'** का आयोजन किया गया। इस दौरान, क्षेत्रीय कार्यालय, देवरिया में निम्नलिखित विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिनके परिणाम निम्नवत रहे:-*

1. ***अखिल भारतीय गीत गायन प्रतियोगिता 2021*** **-** *अखिल भारतीय गीत गायन प्रतियोगिता -2021 का आयोजन **19.08.2021** को क्षेत्रीय प्रबन्धक महोदय की अध्यक्षता में गया जिसमें क्षेत्रीय कार्यालय और विभिन्न शाखाओं से प्रतिभागियों ने वर्चुअल रूप में भाग लिया जिसमें निम्नलिखित प्रतिभागी प्रथम एवं द्वितीय स्थान पर रहे :-*

क्रम सं	***प्रतिभागी का नाम एवं पदनाम***	***प्रतिभागी के विभाग/शाखा का नाम***
1	*सुश्री अंजली शाह, एस.डब्लू.ओ., प्रथम*	*शाखा गौरी बाजार*
2	*सुश्री तबीबा तस्कीन, सहायक प्रबंधक, द्वितीय*	*शाखा गौरी बाजार*
3	*श्री सुशील कुमार रावत, प्रधान रोकड़िया, तृतीय*	*प्रधान रोकड़िया*
4	*सुश्री रजनी कुमारी, व.प्रबंधक, सांत्वना*	*वरिष्ठ प्रबंधक*

2. क्षेत्रीय कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु ऑनलाइन हिन्दी ज्ञान प्रतियोगिता *– **07.09.2020** को क्षेत्रीय कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु बैंकिंग/प्रशासनिक शब्दावली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। जिसका परिणाम इस प्रकार रहा:-*

आयोजित प्रतियोगिता का नाम	***विजेता प्रतिभागी का नाम और प्राप्त स्थान***
ऑनलाइन हिन्दी ज्ञान प्रतियोगिता (शाखाओं हेतु)	*सुश्री पूजा कुमारी, शा.प्र. कैथोली* - ***प्रथम*** *श्री गोपाल कुमार, स.प्र. देवरिया* - ***द्वितीय*** *श्री रवि कुमार, प्रधान रोकड़िया , खटंगा* - ***तृतीय*** *श्री दीपेश श्रीवास्तव, सहायक.प्र. पिपराचंद्रभान* - ***सांत्वना*** *श्री सुनील कुमार मिश्रा, प्रधान रोकड़िया, गढ़मलपुर* - ***सांत्वना***
ऑनलाइन हिन्दी ज्ञान प्रतियोगिता	*श्री सुमीत कुमार, सहायक प्रबंधक,आई.टी.* - ***प्रथम*** *श्री अमित सिंह, प्रबंधक* - ***द्वितीय*** *श्री शहंशाह जावेद, स.प्र. .* - ***तृतीय*** *श्री राकेश कुमार व.प्र.,* - ***सांत्वना*** *श्री निवास कुमार, स.प्रबंधक,* - ***सांत्वना***

3. क्षेत्रीय कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु मौलिक अभिव्यक्ति प्रतियोगिता *– **23.09.2021** को क्षेत्रीय कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु मौलिक अभिव्यक्ति प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। जिसका परिणाम इस प्रकार रहा:-*

आयोजित प्रतियोगिता का नाम	***विजेता प्रतिभागी का नाम और प्राप्त स्थान***
मौलिक अभिव्यक्ति प्रतियोगिता अधिकारी/कर्मचारी वर्ग	*श्री अमित सिंह, प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय* - ***प्रथम*** *श्री अमित मिश्रा, कृषि वित्त अधिकारी* - ***द्वितीय*** *सुश्री अनामिका मल्ल, व.प्र., क्षेत्रीय कार्यालय* – ***तृतीय*** *श्री सुमित कुमार, सहायक प्रबंधक/आई.टी.* – ***सांत्वना*** *श्री श्रीनिवास कुमार, सहायक प्रबंधक* - ***सांत्वना***

हिन्दी दिवस की कुछ झलकियां

दि. 28.09.2021 को हिन्दी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर सर सोराबजी पोचखानवाला के तस्वीर के सामने दीप प्रज्वलन करते हुए श्री सुशील कुमार उपाध्याय, क्षेत्रीय प्रबंधक, एवं हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले साहित्यकारों से सम्बंधित एक बुकलेट का विमोचन करते हुए श्री सुशील कुमार उपाध्याय, क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री आर.एस. राय, मुख्य प्रबंधक, श्री मनोज कुमार सिन्हा, मु.प्र., श्री ओम प्रकाश दिल्लीवर, डिपो प्रबंधक, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड एवं सुश्री शुभ लक्ष्मी शर्मा, राजभाषा अधिकारी.

मौलिक अभिव्यक्ति प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार श्री अमित सिंह, प्रबंधक एवं हिन्दी ऑनलाईन ज्ञान प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार श्री सुमित कुमार, सहायक प्रबंधक/आई.टी. को प्रदान करते हुए श्री सुशील कुमार उपाध्याय, क्षेत्रीय प्रब्रधक एवं कार्यक्रम का आनंद लेते हुए क्षेत्रीय कार्यालय के सभी स्टाफ सदस्य गण.

दि. 14.09.2021 को हिन्दी दिवस के अवअसर पर सभी स्टाफ सदस्यों को राजभाषा शपथ दिलाते हुए श्री सुशील कुमार उपाध्याय, क्षेत्रीय प्रबंधक एवं हिन्दी दिवस व पुरस्कार वितरण समारोह कार्यक्रम का आनंद लेते हुए क्षेत्रीय कार्यालय के सभी स्टाफ सदस्य गण.

स्थापना दिवस (21.12.2021) की कुछ झलकियां

बैंक के 111वें स्थापना दिवस के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलन एवं केक काटते हुए श्री सुशील कुमार उपध्याय, श्री राकेश कुमार, अग्रणी जिला प्रबंधक, देवरिया, श्री आर.एस. राय, मु.प्र. व क्षेत्रीय कार्यालय के अन्य स्टाफ सदस्य

स्थापना दिवस के अवसर पर सभी स्टाफ सदस्यों के साथ श्री सुशील कुमार उपाध्याय, क्षेत्रीय प्रबंधक

अपना बैंक प्रेस मीडिया की नजर में

104 करोड़ के ऋण स्वीकृत

शिविर में मुख्य अतिथि ने चेक वितरित किया।

कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाएं : उपाध्याय

सेंट्रल बैंक में आयोजित कार्यक्रम का दृश्य।

सेंट्रल बैंक को राजभाषा शील्ड का प्रथम पुरस्कार

आउट रिच कार्यक्रम का हुआ आयोजन

चेतना संवाददाता,देवरिया/ गांधी सभागार विकास भवन में आउट रिच कैम्प का आयोजन जिलाधिकारी आशुतोष निरंजन की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सदर विधायक सत्य प्रकाश मणि त्रिपाठी द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। उन्होंने समस्त बैंकों द्वारा लगाये गये स्टॉल का भ्रमण किया तथा सरकार की विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी ली। अग्रणी जिला प्रबंधक राकेश कुमार ने राज्य स्तरीय बैंकर्स कमेटी, लखनऊ द्वारा निर्देशित लक्ष्य 100.00 करोड़ के सापेक्ष 104.00 करोड़ का ऋण वितरण कार्यक्रम का संयोजन करवाया, जिसमें सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया,जनपद का अग्रणी बैंक होने के कारण क्षेत्रीय प्रबंधक एस.के. उपाध्याय द्वारा उक्त कैम्प को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाते हुए रु.11.00 करोड़ का ऋण वितरण एवं स्वीकृति जनप्रतिनिधि एवं जिलाधिकारी श्री निरंजन एवं सीडीओ रवीन्द्र कुमार द्वारा लाभार्थियों को स्वीकृति पत्र से सरकार की योजनाओं से लाभान्वित कराया गया।

वितरित हुआ 20.14 करोड़ का ऋण

सुविधा

361 लाभार्थियों में 20.14 करोड़ के ऋण का वितरण

आयोजन

मनाया गया सेन्ट्रल बैंक का 111 वां स्थापना दिवस

चेतना प्रतिनिधि,देवरिया। सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय में क्षेत्रीय प्रबंधक सुशील कुमार उपाध्याय ने बैंक के 111वें स्थापना दिवस की बधाई देते हुए बैंक के संस्थापक सर सोराबजी पोचखानवाला की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन किया। इस दौरान उन्होंने सभी स्टाफ सदस्यों को अपने बैंक और ग्राहकों के प्रति सेवा पूर्ण ईमानदारी निष्ठा और सौजन्यतापूर्वक करने हेतु शपथ दिलाई। आर राय.एस.मु.प्रबंधक ने सभी स्टाफ सदस्यों का औपचारिक स्वागत किया। राकेश कुमार एलडीएम ने बैंक के इतिहास एवं आज की स्थिति पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती रजनी कुमारी ने किया। इस दौरान राकेश कुमार, संजय कुमार, अनामिका मल्ल, कुमार सौरभ, अनूप दूबे, अमित सिंह, शहंशाह जावेद आदि उपस्थित थे।

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया द्वारा आयोजित किया गया आउटरीच कार्यक्रम

361 लाभार्थियों में रु 20.14 करोड़ का ऋण वितरित

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, वाराणसी (दि. 13-14.11.2021)

दि.13-14 नवम्बर, 2021 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में उद्घाटन सत्र में कार्यक्रम का शुभाअरम्भ करते हुए माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह, माननीय मुख्य मंत्री, उत्तर प्रदेश श्री आदित्य नाथ योगी एवं राजभाषा विभाग के उच्च पदाधिकारीगण.

दि. 13-14 नवम्बर 2021 को राजभाषा विभाग, द्वारा वाराणसी में आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, देवरिया का प्रतिनिधित्व करती हुई श्रीमती शुभ लक्ष्मी शर्मा, राजभाषा अधिकारी एवं सदस्य सचिव, नराकास, देवरिया, साथ में हैं श्री सुरेंद्र यादव, रा.अ. अयोध्या/वाराणसी, श्री संजय गुप्ता, मुख्य प्रबंधक, लखनऊ, श्री अशोक तनेजा, मुख्य प्रबंधक, आंचलिक कार्यालय, दिल्ली व अन्य.

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम

श्रीमती नमिता रॉय शर्मा, महाप्रबंधक/ रिटेल एवं कंज्यूमर लेंडिंग, केंद्रीय कार्यालय, मुम्बई का देवरिया दौरा

दि. 23.11.2021 को क्षेत्रीय कार्यालय देवरिया दौरे पर आयीं श्रीमती नमिता रॉय शर्मा देवरिया में आयोजित क्रेडिट आउट्रीच कार्यक्रम में सेंट शक्ति के अंतर्गत सेंट गृहणी, सेंट वाहिनी आदि योजनाओं की जानकारी प्रदान करते हुए अधिक से अधिक महिलाओं को स्वावलम्बी बनने हेतु प्रोत्साहित किया एवं विभिन्न ऋणों हेतु स्वीकृत राशि का चेक प्रदान करते हुए माननीया महाप्रबंधक महोदया, श्री सुशील कुमार उपाध्याय, क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री मनोज सिन्हा, मुख्य प्रबंधक, श्री राकेश कुमार, अग्रणी जिला प्रबंधक, श्री राकेश कुमार, व.प्र., श्रीमती रजनी कुमारी, व.प्र. व कार्यक्रम में उपस्थित सभी स्टाफ गण.

"यदि हम अपने कर्तव्यों से मुंह मोड़ते हैं तो ईश्वर के गुनहगार बनते हैं."

सरदार वल्लभ भाई पटेल

टाटा एआईए –सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया का व्यावसायिक पार्टनर

श्री संदीप कुमार वर्मा, क्षेत्रीय प्रमुख,
टाटा एआईए, गोरखपुर/देवरिया

जीवन बीमा एक लिखित करार है जो किसी व्यक्ति (बीमाधारी) एवं बीमाप्रदाता के बीच में किया जाता है. इस करार में बीमाप्रदाता बीमाधारी की मृत्यु या कोई दुर्घटना होने पर उसे पूर्वस्वीकृत राशि देने का दावा करता है.

जीवन बीमा का महत्व :

- असमय मृत्यु से संरक्षण
- बचत को बढ़ावा मिलता है
- वृद्धावस्था के लिये बचत
- निवेश की पहल
- सामाजिक सुरक्षा
- जोखिम स्थानांतरण

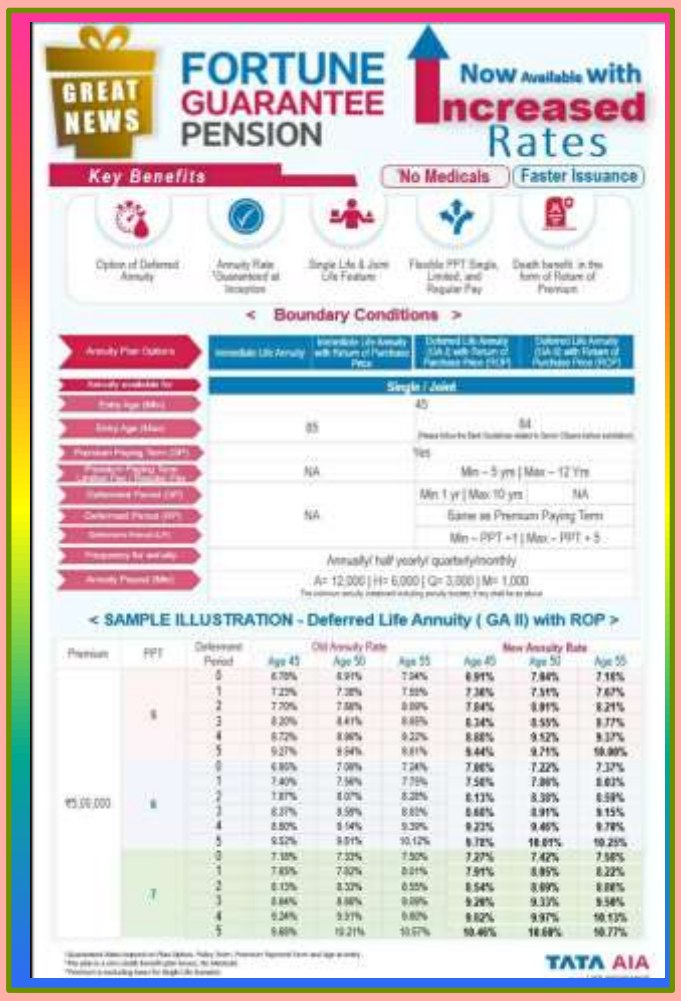

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया से टाटा ए.आई.ए. का अनुबंध वित्तीय वर्ष 2019 से हुआ और उसी समय से निरंतर सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के सभी शाखाओं में बैंक ग्राहकों को पूर्णरूप से जीवन बीमा का लाभ दिया जा रहा है. बैंक के द्वारा अपने ग्राहकों को टाटा ए.आई.ए का सुरक्षा, बचत और पेंशन पॉलिसी की सुविधा दी जा रही है.

प्रत्येक वर्ष सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया एवं टाटा एआईए के एकल सहयोग से किये गये व्यवसाय का कुछ अंश सामाजिक कार्य में समाज के लिये किया जाता है जिसमें गो ग्रीन में बैंक ऑर टाटा ए.आई.ए. द्वारा लगभग 4000 पौधे लगाये गये. कोरोना काल में मास्क एवं सेनीटाइजर का वितरण अस्पताल और मंदिरों में किया गया. सुनहरा बचपन कैम्पेन में गरीब बच्चों को एक साल की शिक्षा मुफ्त प्रदान कराई गई एवं नेत्र ज्योति में कई वृद्ध लोगों की आँख का ऑपरेशन कराया जायेगा.

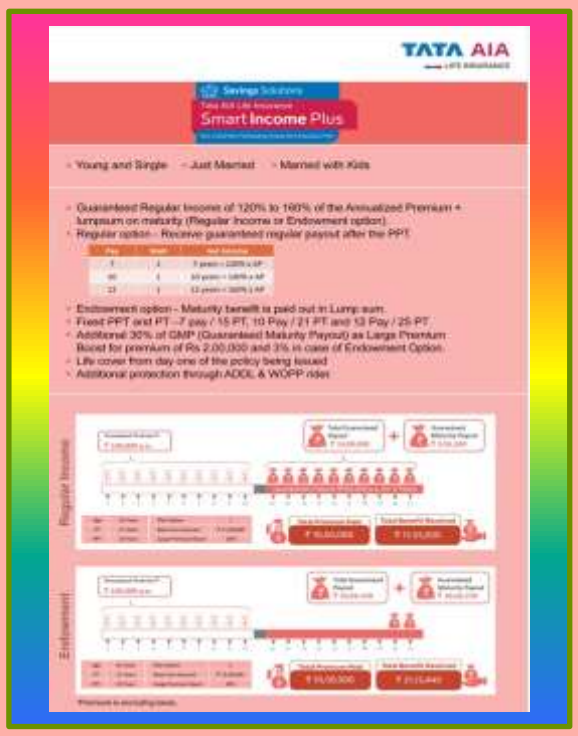

इस प्रकार सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया एवं टाटा एआईए न केवल अपने ग्राहकों को जीवन बीमा का लाभ ही दे रहे हैं साथ ही साथ समाज के हित में भी बढ़ चढ़ कर भाग ले रहे हैं.

टाटा ए.आई.ए. द्वारा बैंक के गृह एवं शिक्षा ऋण लेने वाले ग्राहकों के कर्ज राशि को पूर्णरूप से सुरक्षित किया जा रहा है जिसके कारण बैंक के ऋण लेने वाले ग्राहक अपने आप को सुरक्षित महसूस कर रहे हैं. इसमें ग्राहक की कभी आकस्मिक मृत्यु होने पर कर्ज राशि उनके परिवार को नहीं देना होगा, उनके बदले बकाया शेष कर्ज राशि टाटा ए.आई.ए. प्रदान करेगी.

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के लगभग 4600 शाखाओं से वन स्टॉप वित्तीय सभी सेवायें देने के प्रयास में यह जीवन बीमा भी एक है जिससे बैंक के ग्राहक अपने और अपनों का भविष्य वित्तीय रूप से सुरक्षित कर पायें.

****

सेवा निवृत्ति/ RETIREMENT

श्री अशोक कुमार पाण्डे, अग्रणी जिला प्रबंधक, बलिया, सेवानिवृत्ति की तारीख: 31.07.2021. शॉल व पुष्पगुच्छ प्रदान कर सम्मानित करते हुए डीडीएम नाबार्ड श्री अखिलेश झा जी. इस अवसर पर भारतीय स्टेट बैंक, बलिया के मुख्य प्रबंधक एवं यूपी बड़ौदा बैंक बलिया के क्षेत्रीय प्रबंधक तथा बलिया जिले मे कार्यरत समस्त बैंकों के प्रतिनिधिगण शामिल रहे.

श्री राजेश वर्मा, प्रबंधक, शाखा-बलिया, सेवानिवृत्ति की तारीख: 31.10.2021. सम्मानित करते हुए शाखा के अधिकारी एवं स्टाफ गण.

श्री राम मिलन यादव, प्रधान खजांची, शाखा सलेमपुर, सेवानिवृत्ति की तारीख: 31.12.2021. सम्मानित करते हुए शाखा प्रबंधक एवं शाखा के अन्य स्टाफ गण.

हिन्दी के प्रयोग के लिये वर्ष 2021-22 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति 100%	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 90%	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद ।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%

"हिन्दी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है"

-स्वामी दयानंद

हिन्दी के प्रयोग के लिये वर्ष 2021-22 का वार्षिक कार्यक्रम

13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)	
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	**100%**	**100%**	**100%**
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों।	**40%**	**30%** (न्यूनतम अनुभाग)	**20%**

विदेशों में स्थित भारतीय कार्यालयों के लिए कार्यक्रम

(क)	हिंदी में पत्राचार (भारत/ विदेश स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के साथ)	50%
(ख)	फाइलों पर हिंदी में टिप्पण	50%
(ग)	वर्ष के दौरान नराकास की आयोजित बैठकों की संख्या (नराकास का गठन किसी नगर में केंद्र सरकार के 10 कार्यालय या अधिक होने की स्थिति में किया जाए)	प्रत्येक छमाही में एक बैठक
(घ)	वर्ष के दौरान विराकास (विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति) की आयोजित बैठकों की संख्या (विराकास का गठन कार्यालय-अध्यक्ष की अध्यक्षता में किया जाए)	प्रत्येक तिमाही में एक बैठक
(ङ)	कंप्यूटरों सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी उपलब्धता	100%
(च)	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी / आशुलिपिक	प्रत्येक कार्यालयों में कम से कम एक
(छ)	दुभाषियों की व्यवस्था	प्रत्येक मिशन/दूतावास में स्थानीय भाषा से हिंदी में और हिंदी से स्थानीय भाषा में अनुवाद के लिए दुभाषिए की व्यवस्था की जाए।

बैंकिंग है आसान. तुरंत करो भुगतान.
BANK SMARTLY. PAY INSTANTLY.
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
डिजिटल पेमेंट उत्सव
Digital Payment Utsav
मोबाइल बैंकिंग
कहीं भी, कभी भी बैंकिंग
प्रति दिन लेन-देन सीमा - ₹1 लाख
मोबाइल/डीटीएच रिचार्ज
Mobile Banking
Anywhere, anytime banking
Per day transaction limit - ₹1 lakh
Recharge mobile/DTH
सेन्ट यूपीआई
यूनीफाइड मोबाइल बैंकिंग एप्लीकेशन
तुरंत करें वित्तीय लेन-देन
ऑनलाइन खरीद और बिल भुगतान के लिए सुविधाजनक
Cent UPI
Unified mobile banking application
Send and receive money instantly
Convenient for online purchases & bill payments
इंटरनेट बैंकिंग
24×7 निधि अंतरण
बिल भुगतान
ऑनलाइन कर/जीएसटी भुगतान
Internet Banking
24x7 funds transfer
Bill payment
Online Tax/GST payment
www.centralbankofindia.co.in
टोल फ्री नम्बर 1800-22-1911

सेन्ट गृह लक्ष्मी गृह ऋण ब्याज दर
6.50%*
विशेष आकर्षण 5 ईएमआई तक माफ
सेन्ट वाहिनी वाहन ऋण ब्याज दर
7.0%*
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
त्योहारों के अवसर पर
नारी शक्ति
अपने सपनों को दे नई उड़ान
योजना 31 जनवरी, 2022 तक
31 दिसम्बर तक शून्य प्रक्रिया शुल्क
महिला उद्यमियों, प्रोफेशनल्स एवं कर्मियों के लिए विशेष छूट
922 390 1111 पर मिस्ड कॉल दें

आपकी बेटी के उज्जवल भविष्य के लिये
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
सुकन्या समृद्धि योजना
विशेषतायें :-
–भारत सरकार की बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ के अंतर्गत महत्वाकांक्षी योजना।
–10 वर्ष तक की आयु की बेटी (अधिकतम दो) का खाता खोला जा सकता है।
–केवल 14 वर्ष तक जमा एवं 21 वर्ष में परिपक्वता।
–18 वर्ष की आयु में 50 प्रतिशत भुगतान की सुविधा।
–18 वर्ष की आयु के बाद विवाह होने पर खाता बन्द करने की सुविधा।
–न्यूनतम रू.1000 एवं अधिकतम रू.150000 वार्षिक जमा किया जा सकता है।
–सभी बचत योजनाओं से अधिक ब्याज दर।
–धारा 80सी के तहत इनकम टैक्स में छूट।
ब्याज दर 9.1 प्रतिशत
सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया गोरखपुर